एक ठोप इजोत

मैथिली लघु कथा संग्रह

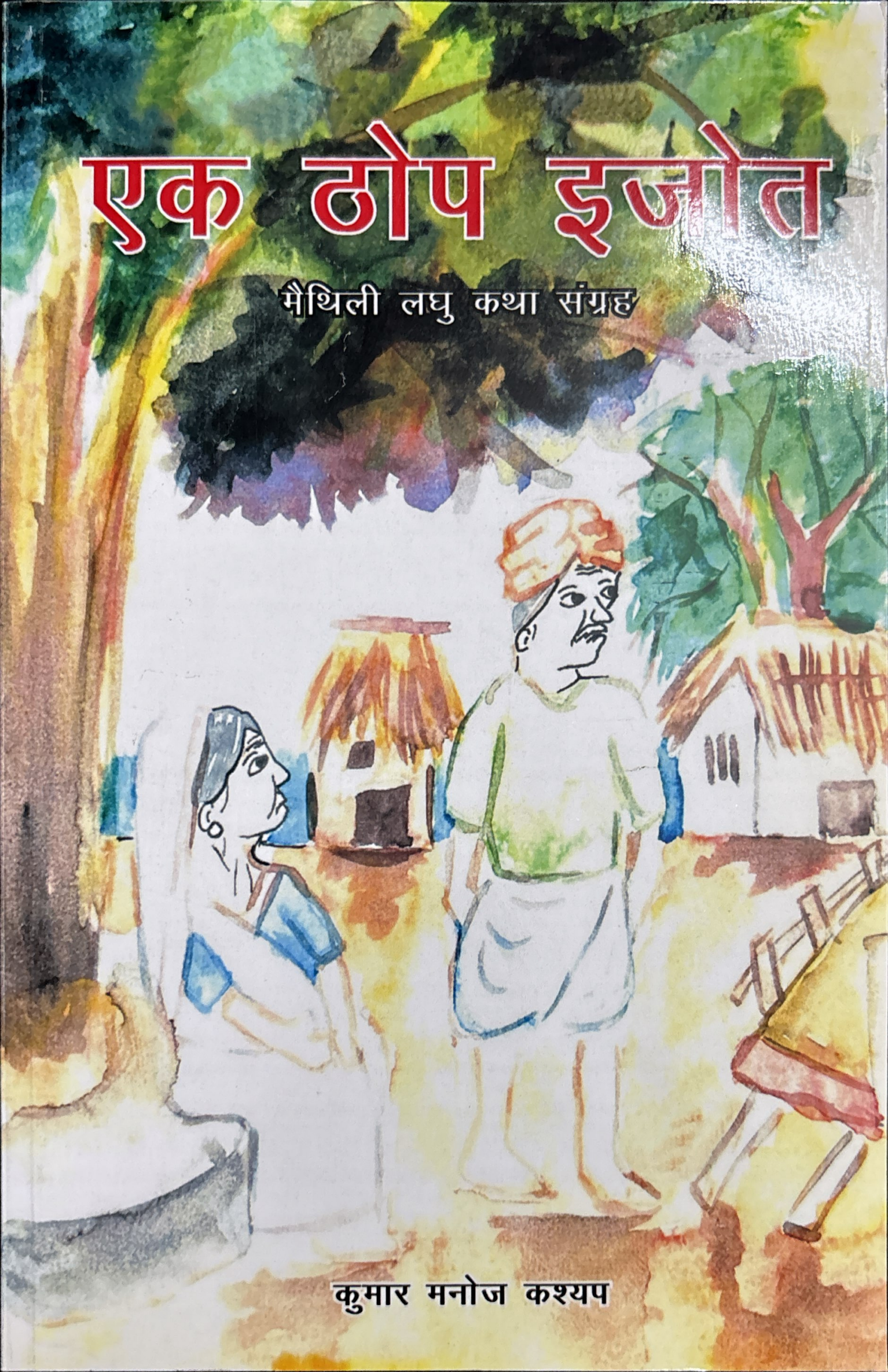

कुमार मनोज कश्यप

एक ठोप इजोत

मैथिली लघु कथा संग्रह

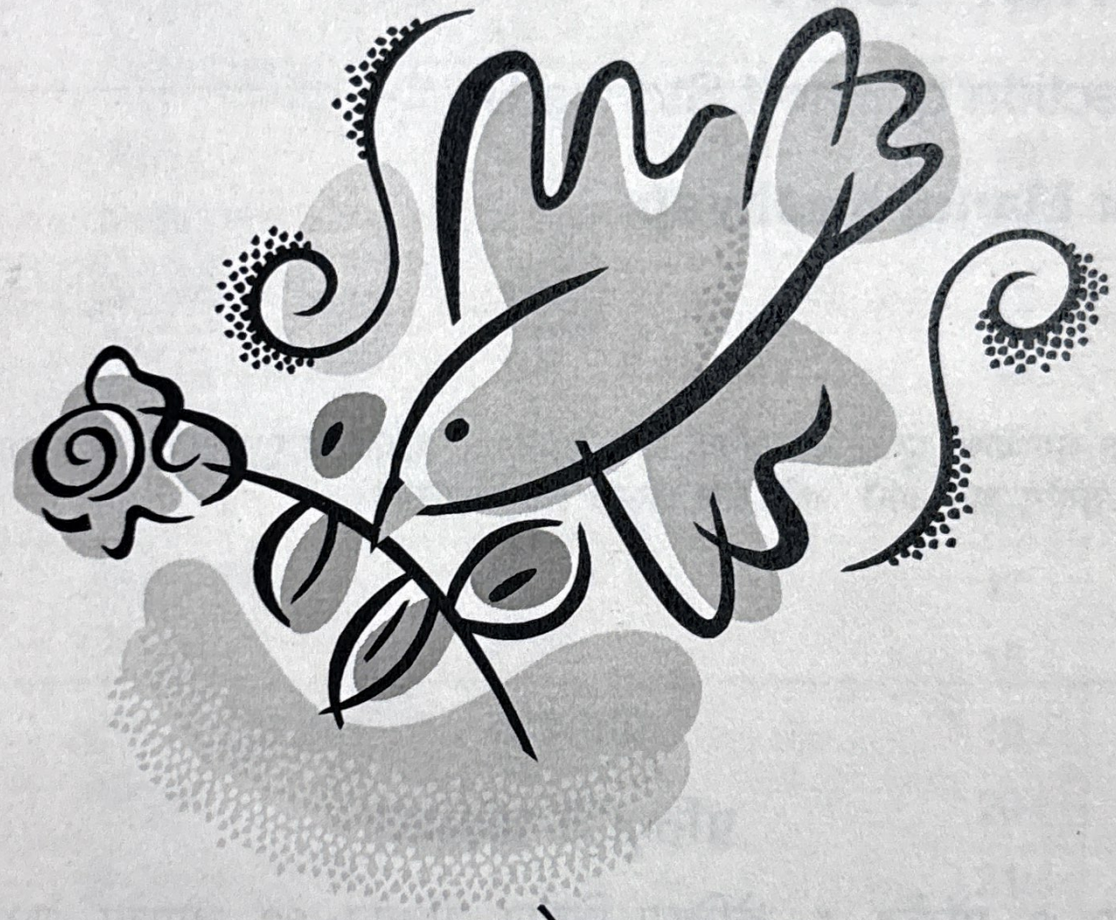

कुमार मनोज कश्यप

प्रतिकृति प्रकाशन

आवरण परिकल्पना, डिजाइन आओर टाईपिंग सहयोग

प्रतिमा मनोज एवं कृतिका

सर्वाधिकार : कृतिका

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : ₹ 125/–

EK THOP IJOT

A Collection of Short Stories By

Kumar Manoj Kashyap

एहि संग्रहक सभ कथा पूर्णतः काल्पनिक अछि आ कोनो जीवित वा मृत व्यक्ति वा घटना स' कोनो टा सम्बन्ध संयोग मात्र अछि जाहि लेल लेखक जिम्मेदार नहिं

प्रकाशक :

प्रतिकृति प्रकाशन

ए–9, पॉकेट–5, केन्द्रिय विहार, सैक्टर–82, नोएडा, उ.प्र.

मुद्रक एवं सज्जा :

डॉल्फिन प्रिन्टो–ग्राफिक्स

4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110055

दूरभाष : 23593541–42

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	हिजड़ा	1
2	भाग्य विधाता	2
3	मत्स्य–न्याय	3
4	अनावरण	4
5	मायक करेज	5
6	हल्लुक म'न	6
7	अपने घर नीक	7
8	खाधि	8
9	स्मृति अपन–अपन	9
10	धाह	10
11	अनसोहाँत	11
12	चिनगी	12
13	स्थिति–अन्तराल	13
14	आगि–पानि–पाथर	15
15	खोंच	16
16	दोसर मोड़	17
17	सीमान	18
18	मतलब अपन–अपन	19
19	अंतराल	20
20	एक ठोप इजोत	21
21	बाटक बात	22
22	धुँआइत सिगरेट	23
23	एक मुट्ठी माटि	25
24	कचोट	27
25	मास्टर साहेब	29
26	भोरक साँझ	31
27	खंड – खंड जिनगी	32
28	नया साल	33

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
29	जोंक	34
30	ईमान	35
31	फटैत कुहेस	36
32	आकाशक ख़सल	38
33	व्यतिरेक	39
34	आनंद	40
35	अनुभव	41
36	परिवर्तन	42
37	अन्योनाश्रय संबंध	43
38	बेटा आ बेटी	44
39	उनटा बान्ह	45
40	छगुन्ता	46
41	दृश्यांतर	47
42	अन्हार	48
43	ईच्छा–मृत्यु	49
44	बचत	50
45	चोर	51
46	दरिद्र–नारायण	52
47	मानवता	53
48	परतीक गाछ	54

समर्पण

रत्नगर्भा धरा
के कोखि मे
पड़ल ओहि बीया के
जे अंकुरित, पुष्पित, पल्लवित
भ' अपन सौंदर्य, सुगंध
आ माधुर्य स'
सम्पूर्ण
संसार के आप्लावित
करै के क्षमता रखैत अछि

प्राक्कथन

मैथिली साहित्य के जनतब रखनिहार बेस नीक जकाँ बुझैत हेता जे मैथिली पुस्तक के प्रकाशन कतेक दुरूह काज अछि आ एकर मूल कारण अछि सांस्थानिक व्यवस्था के नहिं रहब। स्थानीय सरकार पूर्णतः मैथिली भाषा–साहित्य के प्रति उदासीन आ मैथिल बिज़नेस क्लास के एम्हर ध्याने नहिं। किछु लोकक मत छनि जे मैथिली साहित्य के पाठक नहिं छैक आ जेहो छैक से कैंचा खर्च क' क' पुस्तक कीन' नहिं चाहैत अछि। तैं एहि क्षेत्र मे निवेश लाभकारी नहिं। हमरा विचारे एहि तरहक दलील पलायनवादी मानसिकता के परिचायक अछि। मानि लिय एहि दलील मे किछु सत्यता छैहो त' एकर निराकरण के सम्मिलित प्रयास हेबाक आवश्यकता अछि नहिं की तिलांजलि द' देल जाय। एहने परिस्थिति कमो–वेश सभ भारतीय भाषा संगे रहल अछि मुदा अधिकांश भाषा–साहित्य एहि पर विजय पाबि लेने अछि। तखन मैथिली संग कियैक ने हेतैक ?

सांस्थानिक व्यवस्थाक नदारद रहबाक कारणे पुस्तकक मुद्रण, प्रकाशन, वितरण सभ कार्य लेखक के स्वयं अपन तन,मन आ धन स' करय पड़ैत छनि। एहनो विकट आ दुरूह स्थिति मे निरंतर प्रकाशित भ' रहल मैथिली पोथी सभ सत्ये सुखद संकेतक संगहिं आश्चर्यचकित करबा मे सक्षम अछि। ई टॉपिक निश्चये कोनो प्रबंधन–संस्थान के छात्र हेतु केस–स्टडी के नीक विषय साबित भ' सकैछ। हम बुझैत छी मैथिली भाषा आ साहित्य के संगे रचनाकारक जिजीविषा एकरा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर क' रहल छैक। मैथिली शनैः शनैः देशक विभिन्न विश्वविद्यालय मे एकटा स्वतंत्र विषय के रूप मे पठन–पाठन, साहित्य अकादमीक मान्यता, संविधानक अष्टम सूची मे स्थान, देशक राजधानी मे मैथिली–भोजपुरी अकादमी के गठन सभ किछु प्राप्त केने जा रहल अछि आ ई सभ निश्चये सुखद अहसास करा रहल अछि जे मैथिली भाषा आ साहित्यक पथ सुगम नहियों रहैत निरंतर अपन प्रगति पथ पर बढ़ल जा रहल अछि। मैथिली के प्रगति पथ पर अग्रसर करबा मे समर्पित अनेकानेक मनीषी, नायक आ जुझारू कार्यकर्ता के अवदान सभ दिन स्मरणीय रहत। अस्तु।

ईष्ट–मित्र सभक चेरिएला स' गत वर्ष हमर मैथिली लघुकथा संग्रह 'बदलैत समय' प्रकाशित भेल छल। सुधि पाठकक प्रतिक्रिया हमर उत्साहवर्धन केलक। एहि लेल हम अपने सभक सतत आभारी रहब। अपने सभक उत्साहवर्धन आ ईष्ट–मित्रक आग्रह हमरा फेर अग्रसर केलक दोसर पोथी के प्रकाशनक हेतु। आब जे नीक–बेजाए अछि

से अपनेक हाथ मे अछि। अपने सभक रचनात्मक प्रतिक्रिया हमर रचना के परिष्कृत आ परिमार्जित करत से आश करैत छी।

एहि पोथी के प्रकाशन किन्नहुँ संभव नहिं भ' पबितै यदि हमर धर्मपत्नी प्रतिमा मनोज आ पुत्री कृतिका के सहयोग नहिं भेटितै। दुनू मिलि क' रचना चयन स' ल' क' कम्प्यूटर टाइपिंग, लेआउट डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग सभ काज केलनि। एहि लेल हम दुनू माय–बेटी के प्रति सदैव कृतज्ञ रहब। एहि पोथी के प्रकशन मे हमर अभिन्न मित्र उत्पल नारायण सरकार के योगदान सेहो अविस्मरणीय रहत। ई नहिं केवल प्रकाशन हेतु अनिवर्चनीय सहयोग केलनि अपितु तिथि नियत करा क' हमरा स' सभ काज करेलनि। आ अंत मे हम अपन शुभचिंतक ईष्ट–मित्र आ सुधि पाठक के योगदान कोना बिसरि सकैत छी जे हमर उत्साहवर्धन क' क' वर्तमान पोथी के प्रकाशन के संभव बनेलनि।

सादर!

कुमार मनोज कश्यप
नई दिल्ली

पटनाक अशोक
कसैत, सीटी बजबैत जा
रोड पर भीड़ो आने दिन
डेग झटकारि लेने छल।
ओकर रस्ता रोकि क' अ
दुहू कात करेमान लाग
के घरक बालकनी, छ
आ एकटा आगू बढ़ि क
चाहलकै। लड़की अप
चिंता मे व्यग्र। बच्चा,
दृश्य के बेसब्री सँ प्र
एक जोरदार घुस्सा
शोणित बह' लगलै।
आ घीच क' जमीन
आ ओकर हौसला
परिवर्तन होईते दोस
आब क'ल जोड़ने
जोर–जोर सँ थप
जोर सँ खखाड़ि
संग जेना स्वर ब

हिजड़ा

पटनाक अशोक राजपथ पर दू टा मनचला एकटा लड़की के पाछू–पाछू फब्ती कसैत, सीटी बजबैत जा रहल छलै। दिनक 11 बजे के आसपास के समय छल हेतै। रोड पर भीड़ो आने दिन जकाँ छलै। लड़की ओहि मनचला सभ सँ जान छुटेबा लेल डेग झटकारि लेने छल। मुदा सेहो काज नहिं एलै आ ओ दुनू मनचला आब आगू आबि ओकर रस्ता रोकि क' अभद्र भाषा आ गीतक संग अभद्र संकेत सेहो कर' लगलै। रोडक दुहू कात करेमान लागल लोक तमाशा देखैलै त' रूकले छल क्षणहि मे अगल–बगल के घरक बालकनी, छत सेहो लोक सभ सँ भरि गेल। मनचला सभ के हौसला बढ़लै आ एकटा आगू बढ़ि क' ओकर ओढ़नी खिची लेलकै। दोसर बढ़ी क' ओकरा पजियाब' चाहलकै। लड़की अपन दुहू बाँहिं के छाती मे सटेने सिकुड़ल अपन अस्मिता रक्षा के चिंता मे व्यग्र। बच्चा, बूढ़, जवान, स्त्री, पुरूष सभ तमाशबीन बनल आगू आबय बला दृश्य के बेसब्री सँ प्रतीक्षा क' रहल छल। तखने एके पल मे लड़की पाछु पलटल आ एक जोरदार घुस्सा एकटा मनचला के नाक पर मारलक। ओकर नाक सँ बलबल शोणित बह' लगलै। फेर ओकर कालर पकड़ि ताबड़तोड़ घुस्सा ओकर पेट पर मारलक आ घीच क' जमीन पर गिरा देलकै। अकस्मात् ताबड़तोड़ आक्रमण सँ ओ घबड़ा गेल आ ओकर हौसला पस्त भ' गेलै। एही बीच ओहि लड़की के अबला सँ चंडी के रूप परिवर्तन होईते दोसर मनचला दोग बाटे कखनो पड़ा गेल छलै। निःसहाय ओ मनचला आब क'ल जोड़ने ओकरा सँ दया के भीख माँगि रहल छलै। तमाशबीन लोक सभ जोर–जोर सँ थपड़ी बजेनाई शुरू केलक। ओ लड़की भीड़ दिस एक बेर तकलक आ जोर सँ खखाड़ि क' थूक फेकलक.....आक् थू???..... ह!!! थूक फेकै के स्वर संग जेना स्वर बहड़ेलै – 'हिजड़ा' !

भाग्य विधाता

जाड़ मे रौद कैक दिनक बाद खिलल हो त' लोक घर सँ बहरेबाक लोभ संभरण नहिं क' पबैछ। हमहुँ बाहर आबि पार्कक बेंच पर एकटा खाली जगह ताकि बैसि गेल रही। सटले दोसर बेंच पर धार खसेने चरसी सन लगैत एक टा छौंड़ा बैसल..... लाल–लाल करजनी सन अधमुनैल आँखि, काठी सन देह–दशा, मैल–कुचैल कपड़ा जेना खुट्टी पर टाँगल, थरथराईत शरीर, एहनो पछबाक झोंका मे माथ पर पसेना के बून्न! नहिं चाहितो हमर दृष्टि बेर–बेर ओकरे दिस चलि जाईयै। ध्यान सँ देखबा पर चेहरा किछु देखल सन बुझायल मुदा चिन्हल नहिं भेल। हम ओकरा बगल मे जा क' बैसि गेलहुँ – 'की हम आहाँ के नाम पता बुझि सकैत छी?' ओ निर्विकार रहल। हम फेर अपन प्रश्न केलाँ – 'आहाँक चेहरा हमरा किछु देखल बुझाईयै!' ओ तैयो चुप्प। हमर जिज्ञासा हमरा सँ फेर कहबेलक – 'हम अहीं स' पुछैत छी। की आहाँ हमर बात सुनि रहल छी।' अहि बेर ओ खौंझा क उठि गेल आ किकहाँदन बड़बड़ाईत चलि गेल। हम ओकरा जाईत देखैत रहलौं।

– 'ओकरा सँ की गप्प क' रहल रही?' हमरा बगल मे एक व्यक्ति आबि क' बैसैत पुछलक।

– 'नहिं किछु! चेहरा किछु देखल बुझैल तैं नाम–पता पुछैत छलियै।'

– ' ओ वसंतलोक के आर0डब्लू0ए0 प्रेजिडेंट के बेटा छै ने! पढ़ै मे छौंड़ा आगि रहै। मुदा गलत संगति बर्बाद क' देलकै ओकरा। माय–बाप दुहू ठहरलै नोकरिया.....धीया–पुता पर ध्यान दै के पलखतिये नहिं! पाई के घर मे कमी रहै नहिं! स्कूल के जलखै के बनबितै भोरे–भोर, पाईये द' दै जे किछु कीनि क' खा लिहैं। ओई पाई स' ई गलत संगति मे पड़ि नशा कर' लगलै। फूसि बाजि क' आनो काज लै पाई ल' नशा करै। सेहो कम्म पड़' लगलै त' घर सँ पाई आ वस्तु–जात चोराब' लगलै। जखन सेहो बन्न भ' गेलै त' बाहर छोट–मोट चोरी, छीना–झपटी शुरू क' देलकै। ओम्हर ओकर पढ़ाई के स्तर गीड़' लगलै त' स्कूल सँ नित कम्प्लेन एनाई शुरू भ' गेलै। तैयो माय–बाप नहिं चेतलै! चेतलै त' तखन जखन थाना सँ खबरि एलै जे केकरो ब्लेड मारि क' सामान छिनैत पकड़ा गेलै ओ। मुदा ताबत बड़ अबेर भ' गेल रहै। आब ओ बिना ड्रग के नहिं रहि सकैछै। दू–दू बेर त' नशा–मुक्ति केंद्र सँ ईलाज करा ऐल छै तैयो ओहिना के ओहिना!' चुप्प भ' ओ व्यक्ति हमर मुँह निहार' लागल।

दोष ककर ????..... परिपालन!..... परिवेश!! ..... पराधुनिकता!!!.....आ कि सभ समवेत? हमरा ओत' आर बैसल नहिं भेल।

मत्स्य-न्याय

मीनू आब हताश भ' गेल छल। ओकर पढ़ि–लिखि क' समाज मे अपन कोनो स्थान बनेबाक सपना आई मटियामेट होईत लगलै। आब ओकरा स्कूल जेबाक की घरो स' निकलै पर पाबंदी छलै। मायो–बाप कि करितै? समय–साल त' तेहने बितै छै! बड़का–बड़का अपन काज सुतारबाक लेल अपराधी–तत्व के संरक्षण दैत छै आ तकर परिणाम छै अपराधी–तत्व आ अपराध –– दुनू बेलगाम! महिला के प्रति अपराध त' आर बेसी गति स' बढ़ि रहल छै..... तथाकथित सभ्यो लोक गिद्ध–दृष्टि रखैत.....अपन बहिन–बेटी के अतिरिक्त आर सभ महिला उपभोगक वस्तु! जखन कानून–व्यवस्था नाम के चीजे नहिं रहलै तखन लोक त' अपने चेतत आ अपन सुरक्षा अपनहिं क'र' पड़तै! एना मे एकरो माय–बाप अपन बेटी के घर स' कोना बहराई दौ? आई आवारा सभ स्कूल के रस्ता भरि पछुएने छलै; काल्हि कोनो कांडे क' दै! .....कोन ठेकान छै?

जे अपराधी से छुट्टा घुमै, ओकरा लेल कोनो थाना–पुलिस नहिं आ निरपराध के नजरबन्द राखल जाईत छै! कोन एहन कानून–व्यवस्था छै देश के? मीनू के मोन तीत भ' गेल छलै।

अनावरण

चौक के कात मे बड़का पंडाल लागि चुकल छलै ।.....सजल मंच..... कुर्सी सभ पँतियानी मे लगायल जा रहल। लोको सभ अपन स्थान ग्रहण क' चुकल छल। बाट जोहा रहल छलै बस मंत्री महोदय के एबाक। ओहो प्रतिक्षा के घड़ी समाप्त भेलै। कनेक विलम्बे स' सही; मंत्रीजी लोक सभ स' घिरल मंच पर चढ़ला..... ....लोक एके बेर जयकारा लगेलक। मंत्रीजी झुकि क' हाथ जोरि क' सभक अभिवादन स्वीकार केलनि। तकरा बाद चौक के बीचों बीच चबूतरा पर रघुनी के डाँड़ स' ऊपर बनल प्रतिमा के मंत्रीजी पर्दा हटा क' उद्घाटन केलनि। लोक थपड़ी पाड़ि स्वागत केलक.....पुष्प–वर्षा भेल। तत्पश्चात अतिथि सभ ओहि पर फूल–माला चढ़ेलनि आ क'ल जोड़ि बेरा–बेरी प्रणाम केलनि। फेर शुरू भेल भाषणक दौड़ जे बड़ी काल धरि चलैत रहल। वक्ता सभ रघुनी के व्यक्तित्व आ कृतित्व के बखान करैत थाकि नहिं रहल छलाह ... केयो ओकरा समाजवादी घोषित केलाह; त' केयो जुझारू मजदूर नेता; केयो गरीबक मसीहा; त' केयो शोणितक अंतिम बुन्न तक लड़ै बला अमर सेनानी!

जे रघुनी के ल'ग स' जनैत छलै तकरा सभ बात बुझल हेतै। सत्यता त' एतबहि टा छै जे जाहि चौक पर नगर–पालिका के कर्मचारी आ पुलिस रघुनी के अपन तरकारीक ठेला चैन स' कहियो लगाब' नहिं देलकै ओहि चौक के बीचो–बीच रेहड़ी–पटरीवाला के आंदोलन के दौरान पुलिसक फायरिंग मे मरला पर ओकर मूर्ती सीना तानि क' आई ठाढ़ छै। आब एकरा केयो नहिं हटा सकैत छै।

मायक करेज

गली सँ गुजरैत भीड़ आ संगे पुलिस के देखि हमहुँ विलमि क' घटनाक मादे पुछारी कर' लगलहुँ।

– 'अतत्तहः भ' रहल अछि। कहु त' एहनो कसाई बेटा भेलैयै?'

– 'घोर कलियुग बीति रहल अछि। एहि मे त' जे नहिं हुऐ से कम्म!'

– 'एहन संतान सँ बाँझे नीक!' लोक सभ टीप पर टीप दैत रहल। हमरा एतबा त' बुझबा मे आबि गेल छल जे कोनो कलियुगी पुत्र अपन माय–बाप संग कोनो दुर्व्यवहार केने अछि; मुदा पूर्ण घटना वा दुर्घटना के मादें जनबाक जिज्ञासा बनले रहल। अंत मे कात मे ठाढ़ व्यक्ति विस्तार सँ बुझेलक – 'एहि घर मे दू टा कोठली छै जाहि मे दुहू भायक परिवार रहैत छै। केयो भाय माय के अपना संगे नहिं राखि ओकर खाट अपना घरक सामने रोडक कात मे लगा देने छलै। पूसक एहनो कनकनी मे बेचारी बाहरे मे पड़ल छलै। एम्हर सँ गुजरैत वृद्धावस्था संरक्षक दल के कोनो सदस्य के नजरि ओहि वृद्धा के दशा पर पड़ि गेलै आ ओ पुलिस के फोन क' क' बजा लेलकै। ताहि के भीड़ छै।'

ताबत मे पुलिस ओकर दुहू बेटा के हाथ पकड़ने घर सँ बहरेलै आ जीप दिस बढ़' लागल। ओ वृद्धा पुलिस के पैर पर खसि कानि–कानि क' निहोरा कर' लगलै – 'बाबू! हम गोर लगै छी..... हमर बेटा के छोड़ि दियौ। एकरा सभ के कोनो कसूर नहिं! हमरा अपने घर मे मोन उबियाईयै तैं बाहर मे सुतै छी। ई सभ परानी बड़ सेवा–टहल करैयै हमर! हमरा कथुक कोनो दुःख नहिं। एकरा सभ के अनेरो जौं जहल द' देबै बाबू त' ई सभ ठेला कोना लगाओत? बाल–बच्चा सभ त' भुखे मरि जेतै! गरीब पर दया करियौ बाबू!.....बकसि दियौ दुहू भाई के!' पुलिसक पैर थमकि गेलै आ हाथक पकड़ सेहो ढ़ील पड़ि गेलै। लोको सभ अचंभित! दूर सँ लाऊडस्पीकर पर बजैत गीतक स्वर स्पष्ट भ' रहल छलै.....'उस कटे कलेजे से निकला खुश रहो लाल, खुश रहो लाल।'

हल्लुक म'न

सिन्हा साहेब ऑफिस स' घर घुरि कुर्सी पर बैस क' जूता–मौजा खोलिते रहथि कि ओहि घर स' सोनू प्रसन्न मुद्रा मे ऐल दुनू हाथ आ मुँह मे काजू भरने। सिन्हा साहेब अकचकेला। पुछलखिन – 'सोनू एतेक काजू क'त' स' ऐल?' ओ किछु बजलनि नहिं सिर्फ अपन पैंट के जेब दिस ईशारा केलकनि जे अहू मे अछि। 'एकरा एतेक काजू के द' देलकै? अपना घर मे त' छलै नहिं?' सुनिते कनियाँ सकपका गेलखिन। डरिते–डरिते कहलखिन – 'सोनू के हाथ मे कोनो ठीकेदार एकटा पैकेट धरा क' चलि गेलै। जाबे हम बुझियै–बुझियै ताबे त' ई पैकेट खोलि क' भकोसैत रहै।' सिन्हा साहेब किछु बाजि नहिं सकलाह माथ पकड़ि क' बैसि गेलाह।

राति भरि आँखि स' निन्न बिलायल रहलैन..... 'एक झटका मे हमर ईज्जत मटियामेट भ' गेल! एक छोट–छीन पैकेट हमर उसूल के चेथड़ा–चेथड़ा क' देलक। की सभ सोचैत हैत ऑफिस के लोकसभ..... सिन्हा साहेब कम्बल ओढ़ि क' घी पिबैत छथि!' कछमछ करैत भोर केलनि। ऑफिस के रस्ता मे बुधन साहू के किराना दोकान दिस थकमकाईत बढ़ला। बुधन दोकान खोलि क' अगरबत्ती देखा रहल छल। पूजा समाप्त क' क' पुछलकैन – 'की सभ तौल दिय?' सिन्हा साहेब उधार माँगबाक हिम्मत नहिं जुटा पाबि रहल छलाह। मुदा उपाये कोन? जे कहियो नहिं केलनि सैह आई क'र' पड़ि रहल छलनि। हिम्मत केलनि – 'नहिं! एखन किछु तौलु नहिं। हमरा एखन एकटा ड्राई फ्रूट के गिफ्ट पैक चाही।' फेर एम्हर–ओम्हर देख क' बजला – 'पाई धरि हम बाद मे देब; महिना लगला पर।' बुधन साहू एक पल लै गुनधुन मे पड़ल फेर सोचलक सिन्हा साहेब आई तक कहियो एको पाई के उधारी मँगलनि नहिं। कोनो बेर–बेगर्ता हेतनि। एकटा गिफ्ट पैक उठा क' द' देलकनि बिना किछु बजने।

सिन्हा साहेब ओहि ठीकेदार के तलाशी क' ड्राई फ्रूट के गिफ्ट पैक लौटा भरि मोन फज्झति केलनि। आब मोन किछु हल्लुक बुझा रहल छलनि।

अपने घर नीक

महानगर के जिनगी ओकर कनियाँ के बेसी दम घोंटू लगलै। महानगर के चाकचिक्य, सभ किछु के आगि लागल दाम आ ताहि पर किछु हजार रूपया के घरवला के नौकरी..... गुजर करब महाग मोश्किल! कत' गामक पैघ खुलल वातावरण आ कत' शहर मे मात्र दू कोठली के छोट छीन घर जाहि मे चारि प्राणी कहुना दिन कटैत! घर के सीढ़ी त' तेहन उठंग आ संकीर्ण जे लगै जे मुँहे भरे खसि पड़ब। नोकरी महानगर मे छै त' रह' त' एतहि पड़तै। कैक बेर त' निराशा घेर लै जे आब एहिना खोभारिये में दिन कटतै! पैघ आ फैल घर एकरा सभक कपाड़ मे विधना लिखबे ने केलखिन! कखनो काल ई खौंझी पति–पत्नी मे कहा–सुनी के कारण सेहो बनै।

ओकर कंपनी के मालिक हार्ट के बाईपास सर्जरी विदेश सँ करा क' आपस एलै त' दुहू प्राणी जिज्ञासा करै हेतु ओकरा घर पहुँचल। आलीशान घर.....महल सन! आँखि चोन्हरा गेलै ओकर कनियाँ के एहन सुघर, चिक्कन आ पैघ घर मे आबि। चारू कात अचरज सँ निहारैत मालिक के रूम मे प्रवेश केलक। एकटा नर्स मालिक के भोजन करबैत आर केयो कत्तहु नहिं। शिष्टाचारवस हाल–चाल आ एम्हर–ओम्हर के बात–चित होईत रहलै। मालिक इंटरकॉम पर नोकर सँ चाय–पानी लाबै हेतु कहलकै। नोकर एलै त' पुछलकै – 'भिक्खू! मालकिन मार्किट से लौटी क्या?'

– 'जी सर! लेकिन अभी–अभी किटी पार्टी के लिए निकल गई है।'

– 'और छोटे मालिक?'

– 'वे छोटी मालकिन के साथ कहीं निकले हैं। कहा था डिनर बाहर ही करके आयेंगे।'

– 'ठीक है। मालकिन आयें तो कहना इंटरकॉम पर बात कर ले। '

ताबत नर्स दवाई कप मे ल' क' ठाढ़ छलै। दवाई खुआ क' नर्स ओकरा सहारा द' क' सुता देलकै। ईहो दुहू आदेश ल' क' घुरि रहल छल। कनियाँ जे एतेक काल सँ छगुन्ता मे गुम्म छलै एतबे बजलै – 'एहि स' अपन सभक गरीबी आ छोटे घर नीक ..... छोट अछि; मुदा जीवंत त' अछि!'

खाधि

बैसाखक जड़ैत दुपहर मे सुनसान सड़क पर कार खड़ाब भ' गेनाई केहन कष्टकर होईत छै! सौभाग्य सँ कार त' स्टार्ट भ' गेल; मुदा कारीख सँ हाथ पोता गेल छल। पानिक बोतलो खालिये पड़ल छल। पानिक कोनो श्रोतो नजरि नहिं अबैत छल। कनेक दूर पर मजदूर सभ सड़क मरम्मत के काज मे जुटल छल। ओकरा सभ लग पानि भेटबाक संभावना बुझैल। लग मे कार रुकिते ओ सभ कनेक हड़बड़ैल; मुदा फेर यंत्रवत अपन–अपन काज मे लागि गेल। हम कार सँ बाहर आबि क' पुछलियै – 'तोरा सभ लग कने पानि भेटत हाथ धोबा लेल?' एक टा मजदूर बिनु किछु बजने गाछ तर राखल अपन सामान के बीच सँ पेप्सी के कारी पड़ल बोतल उठा अनलक जाहि मे आधा पानि छलै। गमछा सँ गरदनि–मुँह के पसेना पोछैत बोतल हमरा दिस बढ़ा देलक। ओकर चेहरा हमरा किछु चिन्हल सन बुझैल। मोन पाड़य लगलहुँ। 'तों दिनेश.....?!'

'हँ। आहाँ राघवबाबू.....?!'

'राघवबाबू नहिं, राघव कह।'

'केहन बात करै छी राघवबाबू!' ओ क'ल जोड़ि लेलक।

'फेर राघवबाबू! अरे हम तोरा लेल वैह राघव छी ....संगे चोरा–नुक्की, गुल्ली–डंडा, कबड्डी खेलब; नदी–पोखरि मे चुभकब, बारिये–बारिये भरि दुपहर लताम, शरीफा, बैर, केरा, टाभ नेबो चोरा क' तोड़ब; आम–कटहर ओगड़ैत मचान पर ताश खेलब; सत्यनारायण भगवानक पूजा काल लोक के तरे–तर झाड़ूक सिकी भोंकब.....ई सभ तों कोना बिसरि गेलैं दिनेश!?' हम आगू बढि ओकरा गारा लगा लेब' चाहैत छलहुँ। 'राघवबाबू ! हमर सौंसे देह धुरियैल अछि!' – ओ क'ल जोड़ने पाछु हटि गेल।

कबड्डी खेलैत, कुश्ती लड़ैत धुरियैल त' सभ संगी–साथी संग हमहुँ रहैत छलहुँ; भरि दुपहर रौद मे बौआइत पसेना सँ तर–बतर त' हमहुँ रहैत छलहुँ। कहाँ कोनो अंतर तहिया हमरा आ अपना बीच मे करैत छल दिनेश। समय कोन एहन खाधि खुनि देलक जे तों आई अपना सँ हमरा एतेक दूर क' देलैं दिनेश.....?

स्मृति अपन–अपन

करिया कक्का के प्राणांत जाहि घर मे भेल रहनि ओ घर त' जेना अछोप सन भेल भैं–भैं करैत छल। दिन मे त' बिसरल–भोतियैल केयो कोनो कारणे चलियो जाई; मुदा साँझ मे डिबिया लेसला के बाद डेग देब की केयो ओम्हर तकबो ने करै ..... कारण....? भूतक ड'र! आ साईत यैह कारण छलै जे कक्का के पहिरल कपड़ा–लत्ता सभ डेनमा माय हाथे डबरा कात मे फेका देल गेलै। बात–बटोही ओहि कपड़ा–लत्ता सँ पैर बचाईये क' चलै। बाँचल घड़ी, रेडियो, छत्ता, छड़ी सभटा पुरहित–पात्र के श्राद्ध मे दान द' देल गेल। कक्का जाहि घर मे सुतैत छलाह से त' काले–क्रमे आब उपयोग मे आबि गेलै; मुदा कहियो हुनकर एहि घर मे हेबाक संकेत रूप मे मात्र एकटा माला चढ़ैल गर्दा भरल फोटो.....आओर किछु नहिं!

दरभंगा के संग्रहालय घुमैत काल दरभंगा महाराजक बिछाओन, कपड़ा–लत्ता, वस्तुजात के देखि क' अंश पूछने रहै – 'अपनो घर मे बाबा के सामान सभ अहिना कियै ने रखलियै पापा?' एकर उत्तर देब हमरा लेल मोश्किल भ' गेल छल। कहि त' देलियै जे केवल महान लोकक सामान सभ स्मृति हेतु राखल जाईत छैक। मुदा एहि उत्तर सँ कि ओ संतुष्ट भ' पबितै यदि ओकर ध्यान बाहर मे कटाउझ करैत बानर आ कुक्कुर पर नहिं पड़ितै?

धाह

बस स्टैंड मे पान खाईत रही कि कान्ह पर केकरो हाथ पाबि अकचका क' पाछु तकलहुँ.....हम त' एकबेर मे चिन्हबो ने केलियै.....वैह चिन्हने रहै हमरा। मीटिंग मे चंडीगढ़ जेबाक जल्दी के कारणें संक्षेपे मे ओ हमर हाल–चाल पुछि अपन विज़िटिंग कार्ड द' क' डेरा पर भेंट करबाक न्योत द' क' चलि गेल। 'संगे–संगे गाय चड़ेलौं, किसुनमा भ' गेल गोसाईं..... हमर नेनपन के संगी 'कलक्टर' बनि गेल!.....हमर छाती गर्व सँ फुलल जा रहल छल।

ओहि दिन ओकर कोठी पर पहुँच गेलहुँ ओकरा सँ भेंट कर'। गार्ड हमरा अपनहिं लग ठाढ़ क' क' ओकरा फोन स' पुछलकै। किछुये पल मे ओ अपन कमीजक बटम लगबैत बहरैल आ दौड़ैत आबि भरि पाँज हमरा पजिया लेलक.....कृष्ण–सुदामा के शाश्वत मिलन! दुहू ओहि ठाम बेंच पर बैसि क' बतियै लगलहुँ। तखने भीतर सँ एकटा स्त्री अग्निश्च–वायुश्च होईत बहरेलीह – 'तुमको अपनी ईज्जत का कोई ख्याल है या नहीं? कहाँ बैठ के बात कर हो आप?..... शर्ट तक तो ढंग से पहना है नहीं! छीः!... .....शेम टू यू! लिसन..... आगे से घर पर मत बुलाना किसी को..... जिसे बुलाना हो ऑफिस मे बुलाया करो। नाउ कम..... वी आर गेटिंग टू लेट फॉर द' पार्टी!' कही क' ओ ओकरा हाथ पकड़ि क' जबर्दस्ती घीचि क' कार मे बैसा देलकै। ओ जाईत–जाईत क'ल जोड़ने हमरा ऑफिस मे निचैन स' गप्प करबाक बात कहि क' चलि गेल। हम निस्तब्ध ओकर गाड़ी के जाईत दूर तक देखैत रहलहुँ; फेर अपन साईकिल गुड़कबैत डेरा घुरि रहल छी।

एखने किछु दिन पहिने गाम गेल रही त' ओकर माय भेटल रहै। पुछने रहियै – 'पिसी! तों गामे मे रहै छैं?' ओ कहने रहै –'हँ बाऊ! बेटा–पुतोहू त' बड्ड जिद्द करै यै जे आब बूढ़ भेलैं; कतेक दिन हाथ पैर चलेबैं; हमरे संगे र'ह। मुदा हमरा बान्हल घर मे जहल जकाँ लगैयै! गाम मे छी त' दस लोक सँ बाजि–भूकि लै छी, खेतो–पथार देखि लै छी.....शहर–बजार मे से कत'?'

हम सोचैत जा रहल छी.....एहि दुहू घटना मे दूर–दूर तक कोनो संबंध भ' सकैत छै की .....???

अनसोहाँत

वियाहक तैयारी अपन अंतिम क्षण मे छलै। परिवार संगे सभ हित–अपेक्षित काज के सफल बनेबा मे अपसियांत.....गामो–घरक लोक मे उत्साह.....फणीबाबू के बेटी के वियाह भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी सँ भ' रहल छै आ ताहू सँ पैघ बात जे आदर्श विवाह! चौक–चौराहा, हाट–बाजार सभ ठाम त' यैह चर्चा! फणीबाबू अपना दिस सँ वर–वरियाती के स्वागत मे कोनो कोर–कसर बाँकी नहिं रह' देब' चाहैत छलाह। वियाहक ओ बहुप्रतीक्षित दिनो आ समयो एलै। फणीबाबू के जखने फोन एलैन जे वरियाती गामक सीमान पर पहुँचि गेल कि तखने सगरो दलमलित भ' उठल। लोक सभ भागल अपन–अपन घर सैंतल–सहेजल वस्त्र–जात पहिर क' वर–वरियाती के स्वागत की अभूतपूर्व आतिशबाजी, बाजा–गाजा आ बरियाती के नाच देखबा लेल..... .....आखिर आई0ए0एस0 के वियाह छै; कोनो ऐरे–गैरे के नहिं!

आहि रे बा! ने फटक्का; ने बाजा–गाजा; ने नाच–गान.....! वर–वरियाती ओहिना खखनाह जकाँ दरबज्जा पर आबि गेलै! लोक के त' विश्वासे ने होई..... सभ अवाक् जेना ठकमुड़ी लागि गेल होई। प्रत्यक्षतः बजबाक त' केयो हिम्मत नहिं क' सकल मुदा कनफुसकी चलैत रहलै।

एम्हर वर एक खंड धोती, कुर्ता आ दोपटा के अलावा आर किछुओ टा लेब स्वीकार नहिं केलनि। फणीबाबू के एतेक रास वस्तु–जात के ओरियाने कैल रहि गेलनि। फणीबाबू के सब्रक बान्ह तखन टुटिये गेलैन जखन सोहाग मे गहना के जगह पर एकटा मंगलसूत्र आ एक जोड़ बिछिया मात्र टा देखलनि – 'समधि! हम नहिं जनैत छलहुँ जे अपने एतेक पैघ कृपणता करब! सौंसे गाम–समाज मे हम उपहासक पात्र बनि क' रहि गेल छी! दरिद्रो–सँ–दरिद्र लोक एहि सँ बेसिये धूम–धाम सँ अपन बेटा–बेटी के वियाह करैत अछि! एतेक अर्जल संपत्ति कोन काज ऐत? हम त' समाज मे कतहु मुँह देखेबा जोकरक नहिं रहि सकलहुँ' –– कहैत–कहैत ओ अबोढ़कार हिचकि–हिचकि क' कान' लगलाह। वर–वरियाती सभ अवाक् .... आदर्श विवाह के माने की?

चिनगी

शोभाबाबा के बेटा–पुतोहू जखन ई बुझेबाक प्रयास केलकनि जे ओ वृद्धाश्रम मे सभ सँ सुरक्षित रहि सकैत छथि तखन शोभाबाबा के अपना ऊपर बज्रपात सन बुझेलनि। लगलनि जे आई जँ ई धरती फाटि जैतै त'ओ ओहि मे समा जैतथि। आई सभ किछु हेरायल सन बुझेलनि हुनका। कहियो कल्पनो ने केने रहथि जे एहनो दिन देख' पड़त। बेटा–पुतोहू बुझबैत रहलनि जे ओ ओकरा सभ संगें मेक्सिको मे रहि नहिं सकताह आ आन एहन केयो अछियो ने जकर भरोस पर गाम मे ओ रहि सकैत छथि।शोभाबाबाके मुँह सँ एको शब्द नहिं बहरेलनि; खाली आँखि सँ अविरल अश्रुधारा बहैत रहलनि। लागनि जे यैह दिन देखेबाक लेल विधाता जियेने रहलाह.....एहि सँ नीक त' जखन भयानक क्षयरोग भेल रहनि तखने भगवान जगह द' देने रहितथिन त' ई दिन त' नहिं देख' पड़ितनि..... अछैत बेटा–पुतोहू वृद्धाश्रम मे रह' पड़ितनि! मोन भेलनि जे जहर–माहुर खा क' प्राणांत क' ली; मुदा आत्म–हत्या केने ब्रम्ह–हत्या के पाप लागत से मोन मे अबिते थमकि गेलाह.....एक जन्म के पाप केलहुँ त' ई भोग' पड़ि रहल अछि; एहि जन्म मे पाप करब त' की हैत.....?

शोभा बाबा के सम्पूर्ण संसार आब वृद्धाश्रम में समटा क रहि गेल छलनि..... ओही ठाम रहनाहर सभ त' हुनके सन छल.....एक–दोसरा संगे मोनक बात करैत समय बीत' लगलनि। एम्हर बाबा के पुतोहू सेहो मेक्सिको मे नोकरी ज्वाईन क' लेलीह। मुदा समस्या उठल छोट–छोट दुनू बच्चा के दिन भरि सम्हारत के? क्रेच मे बढ़ैत अपराध के घटना हुनका सभ के सशंकित क' रहल छलनि। आया रखनाई सेहो सुभितगर नहिं। बेस घमर्थन के बाद यैह निर्णय भेल जे बाबा के एहि ठाम ल' आनल जाय। दिन मे सभ इंतजाम क' क' कनियाँ जेथिन.....बस बाबा के बच्चा सभ के देखभाल के जिम्मा रहतनि। एहि सँ दुहू प्राणी निश्चिन्तो रहतीह आ बाबा के सेहो वृद्धाश्रम सँ मुक्ति भेटि जेतनि।

ओहि दिन शोभा बाबा पूसक मनोरम रौद मे गप्प–सरक्का मे निमग्न छलाह। चौकीदार समाद देलकनि – 'बाबा! आपका बेटा–बहू आपसे मिलने आया है।' सुनिते बाबा के आँखि मे चमक आ मुख पर आश्वस्ति आबि गेलनि। गुप्ता बाबू चौंकला – 'शोभाबाबू! आपको कोई बेटा–बहू भी है ये बातें आप ने हमें कभी बताया नहीं?' शोभाबाबा कठ–हँसी हँसैत बजलाह 'मुझे भी कहाँ पता था मेरा भी कोई बेटा–बहू है! मेरा कोई इस दुनिया में होता तो मैं आज यहाँ क्यों होता?' कहि क' ओ एक टा गहीर साँस छोड़लनि। छाऊरक ढेर मे सुनगैत चिनगी के शोभाबाबा फेर सँ तोपि सामान्य भ' रहल छलाह। ओतेक काल सँ ठाढ़ चौकीदार घुरि गेल छल।

स्थिति–अन्तराल

हमरा देखिते ओ अपन चिर–परिचित अंदाज मे बाजल –'शिशिर रौ! रे मर्दे! कत' पतनुकान नेने छलैहें से नहिं जानि? हम त' तोहर नेम–प्लेट देखि क' एलौं।' हमरा अकचकाईत देखि बाजल – 'हँ रौ तों कियै चिन्हबें? संगे–संगे गाय चेरेलौं; कुसुनमा भेल गोसाईं!' ' मदन.....?' – हम धखाईते–धखाईते बजलहुँ।

'सैह त' हम कही जे शिशिर हमरा कोना बिसरि सकैयै। खैर कह तों एत' कहिया ज्वाइन केलैं? एत' त' पहिने वर्मा साहेब छलैथ ने?'

'हँ! हमर पोस्टिंग हुनके जगह पर भेलै। तों कह जे तों एत' कत'?'

–'हम तोरे ऑफिस मे ठेकेदार छी। भगवानक दया सँ नून–रोटी के दिक्कत नहिं अछि। एहि शहर मे अपन धाखो नीक अछि। तों अपन बारे मे बता? कतेक दिन भ' गेल भेंट भेना.....हमरा ख्याल सँ मैट्रिक परीक्षा के बाद आई पहिले बेर भेंट भेल।'

–'हँ से सत्ये। हमहुँ पढ़ाई ख़त्म क' क' नोकरी मे की एलहुँ; समयाभावे गाम–समाज सभ छुटल। हर दोसरा–तेसरा साल पर ट्रान्सफर ....मगहिया डोम जकाँ बोरिया–बिस्तर बन्हने घुमैत रहू.....पछिले महिना के अंत मे त' कते मोश्किल सँ साकेत मे एकटा डेरा भेटल त' परिवार अनलहुँ।'

–''ऐं रौ ! हमरा एहि शहर मे रहैत तोरा डेरा के दिक्कत भेलौ आ हमरा भनको ने लागल! आब त' जे भेलै से भेलै। आगू सँ किछु जरूरत होऊत' हमरा एक बेर फोन खड़का दिहैं। आ सुन, एखन त' हम कनेक हड़बड़ी मे छी; साईट पर जेबाक अछि। रवि दिन हम सबेर मे गाड़ी पठा देबौ। दुहू परिवार के भेंटो–घांट हैत आ संग बैसि क' भोजनो करब।'

हम गौरवान्वित छलहुँ। एक त' एहि अनचिन्हार शहर मे केयो अप्पन अछि आ दोसर हमर सहपाठी आई पैघ व्यक्ति भ' गेल अछि। हम सोचै लगलहुँ ओकरा बारे मे। क्लासक ओ बैक–बेंचर....कहुना–कहुना क' मैट्रिक तक पहुँचल। मैट्रिक परीक्षा मे ओकर सीट हमर ठीक पाछु मे पड़लै। ओ हमरा धमकी दैत कहने रहै – 'अपन कॉपी देख' दिहैं हमरा..... नहिं त' हम अपन कॉपी पर तोरे रोल नंबर, रोल कोड लिख लेबौ। एहि स' दुहू के रिज़ल्ट पेंडिंग हैत.....हमरा लेल त' नीके हैत जे फेल होई के कलंक सँ बाँचब .....तों अपन सोचि ले बच्चू!' हम ओकर कमीनापन सँ आहत आ अवाक रहि गेल रही। मन मसोसि क' परीक्षा मे अपन कॉपी खोलने राखी। ओ थर्ड डिवीज़ने सही; मैट्रिक पास क' गेल रहै।

भोर मे चमचमाईत कार हमरा घरक आगू ठाढ़ भ' गेल। ओकर शानदार कोठी .... आगू मे बड़की टा लॉन .... चहुकात कतरल घास जेना कालीन बिछायल .....सभ किछु संपत्ति के दंभ भरैत। दुहु परिवार के परिचय भेल..... गप्प–सप्प चलैत रहल। जहिना जलखई मे रंग–विरंगक विन्यास तहिना भोजनो मे। साँझ मे बड़ मोश्किल सँ विदा ल' क' घर एलहुँ। घर पहुँच क' हमर पाँच सालक पुत्र हमरा गरदनि मे लटैक क' बाजल – 'पापा! अंकल के एतेक पैघ घर.....कार..... नोकर–चाकर !!! अपना सभ लग कियैक नहिं अछि? भैया कहैत छथि जे अपना सभ गरीब छी! से ठीके पापा?' 'नहिं बेटा! अंकल के घर मे बेसी लोक छनि तैं हुनकर पैघ घर छनि .....नोकर छनि। अपना सभ त' चारिये गोटा छी तैं छोट घर; मम्मी अपने काज क' लैत छथि तैं नोकर नहिं अछि। अपना सभ त' एखन स्कूटर पर आबिये जाईत छी तैं कार नहिं किनलहुँ। खगता भेला पर सभ किछु कीनि लेब।' हमर तर्क सँ संतुष्ट भ' ओ खेलय चलि गेल। हमर मोन मथैत रहल.....एखन अबोध छै त'बुझि गेल.....बाद मे?

आगि–पानि–पाथर

जेहने नाम माय–बाप दुखनी रखलकै तेहने कपारो भेलै बेचारी के! जेहने नैहर तेहने सासुर! घरबला महान पीबाक.....भांग–धथुर जे भेटै से हपसि लई। अपने त' कमाई–धमाई किछु करई नहिं; दुखनी जे किछु चौका–बरतन क' क' आनै सेहो छिनी लई पिबै लै। मारि–गारि खाई के लेल त' दुखनी श्रापले छल। कहुना क' एक साल के बेटा के ल' क' समय कटनहिं जाईत छल। ओहि राति ओकर घरबला नशा मे धुत्त ओंघराईत–पोंघराईत घर एलै – 'हई!....कत' गेलैं?.....ला खाई लै.....बड़ भुखैल छी।' 'बड़ कमासुत अछि.....कमा क' तोड़ा राखि गेल अछि जे छ–नौ के सचार लगा क' रखने रहबै!' भनभनाईत दुखनी साँझ मे केकरो घर सँ जे दिनका रोटी–तरकारी भेटल रहै ओहि मे सँ बाँचल दू टा रोटी आ कनी तरकारी आ एक लोटा पानि ल' क' ओकरा आगू क' देलकै। एकटा रोटी खा क' साँझ मे ओ अपने पानि पीने रहै। दिनका टटैल रोटी देखि क' ओकर तामस टीक पर चढ़ि गेलै। तामसे विक्ख भेल लगलै बिखिन्न–बिखिन्न के गारि पढ़य। ताहू सँ म'न नहिं भरलै त' लाते–मुक्के ओछान क' देलकै। आब दुखनी के सहनशीलता चुकि गेल छलै। ओ विषाद मे अपन चिल्हका के उठेलक आ ओहि निशिभाग राति मे घर सँ बहरा गेल। चलैत–चलैत रेलवे स्टेशन पर आबि क' रूकल। स्टेशन के कोन मे दुबकल बैसल ओ अपन कपारक सिंहावलोकन करैत रहल। ओकर स्थिति के अनुमान एकटा चाहवला के भेलै। ओ ओकरा लग बैसि बड़ी काल धरि सांत्वना देलकै। बड़ बुझेलकै ओकरा जे ई दुनिया पिशाच सँ कनियो कम नहिं। एसगर नारी के सभ नोचय–खसोटय के अवसर चाहैत अछि। मुदा दुखनी के मोनक अवसाद ओकरा बुद्धि पर मोट पर्दा पसारि देने छलै। ओकरा अपन कोनो चिंता नहिं। एहन कष्टमय जीवन के ओ तिलांजलि देबाक लेल तैयार छल। चिंता छलैक त' बस अपन नेना के। ओ चाहवला के नेहोरा केलकै – 'भैया! हमरा पर दया क' क' हमर नेना के कतहु सुठाम लगा दियौ। हमरा अपन चिंता नहिं; चिंता बस अपन नेने के अछि। ई कहुना कतहु सुठाम मे पोसा जाय .....हमरा आर किछु ने चाही।' 'जखन हमरा भैया मानलैहैं तखन मामे लग पोसाय दही एकरा; आन केकरा देबही।' चाहवला के स्वर मे आत्मबोध आ आत्मनिर्णय छलै। फेर ओ बाजल 'हम बचन दैत छियौ बहिन जे हम अपन संतान आ एकरा बीच कोनो टा अंतर नहिं करबै।'

दुखनी अपन नेना के ओकरा कोर मे द' क' एक बेर पाछू तकलक आ छाती पाथर क' क' ओहि ठाम सँ पड़ा गेल। प्रात भेने सभ अखबार मे समाचार छपलै – 'गरीबी से तंग एक माँ ने दूधमुंहे को बेचा।'

खोंच

एकटा वियाह मे अलीगढ़ जेवाक अवसर भेटल त' मोन पड़लाह माधव भैया। ओना त' माधव भैया जहिया सँ दिल्ली मे नोकरी ज्वाइन केला तहिया सँ दिल्लीये के भ' क' रहि गेलाह। परिस्थिति जन्य विवसता वा जे कहू; पन्द्रहो–बीस बरख भ' गेल हैत माधव भैया सँ भेंट भेला। आब जखन अलीगढ़ जाईये रहल छी त' माधव भैया सँ सेहो भेंट क' लेब.....अलीगढ़ सँ दिल्ली दूरे कतेक ? किछु दिक्कत त' जरूर भेल हुनकर मोबाईल नंबर उपरेबा मे; मुदा जखन मोबाईल नंबर उपरायल त' हालोचाल पुछि लेलियनि आ डेरा के पता सेहो। विवाहोपरांत दिल्ली गेलहुँ आ पुछैत–पुछैत हुनकर डेरो पर पहुँचि गेलहुँ। भौजी सँ पहिने भेंट नहिं छल तैं परिचय देमय पड़ल.....हम माधव भैया के ममियौत भाय..... विमल! ओ बजली किछु नहिं; हमरा बैठक मे छोड़ि भीतर चलि गेलीह। हम नोकरबा सँ माँगि क' पानि पीलहुँ आ सोफा पर बैसल माधव भैया के ऑफिस सँ एबाक प्रतीक्षा करय लगलहुँ। बैसल–बैसल मोन अकछा गेल। मोन भेल जे ताबत बाहर मे टहलि ली .....देखियै दिल्ली के हवा–पानी! नोकरबा के कहि हम घर सँ बहरा गेलहुँ आ एम्हर–ओम्हर टहलैत रहलहुँ। दिल्ली के चका–चौंध रोशनी मे दिन राति मे कोनो विशेष फर्क नहिं! ठेहिया सेहो गेल रही आ सोचलहुँ आब माधव भैया सेहो ऑफिस सँ आबि हमर बाट तकैत हेताह तैं डेरा घुरि जेबाक चाही।

डेरा के बाहरे रही त' भीतर सँ कोनो स्त्री के तेज स्वर सुनबा मे आयल – 'भने जे अहलादि क' बजेलियै यै त' करियौ निमेरा.....हमरा बुते नहिं पार लागत भानस–भात! दाई बीमार छै से सभटा काज करैत–करैत हमर अपने जान निकलि रहल अछि ताहि पर सँ एहन दूरक पाहून! मान न मान, मैं तेरा मेहमान! जखन आहाँ बेरोजगार रही तखन कोनो मसियौत–पिसियौत त' घुरियो क' ने तकलक .....आब नोकरी भेटल त' सभ खखोरि क' खाई लेल तैयार....!'

– 'हे हम निहोरा करैत छी.....धीरे बाजु....देवालो के कान होईत छै!'

–'होईत छै त' होमय दियौ.....हमर की बिगाड़त? खोएबो करियौ आ जाई बेर मे किछु देबो करियौ ..... किछु खन्हन; किछु मोटरी बन्हन... एहन लोक सँ दूरे रहब नीक....!'

हम अपरतीभ.....अचंभित! मोन करूआ गेल। घुरि गेलहुँ। रेलवे स्टेशन पहुँचि माधव भैया के फोन केलियैन – 'भैया ! हम आपस गाम जा रहल छी... बड़ जरूरी काज अछि।'

– 'एना कोना एलैं आ चलियो गेलैं.....भेंटो ने भेल!'

– 'अखन बड़ जल्दी मे रही..... अगिला बेर भेटब तखन निचैन सँ गप्प हेतई।'

हम स्टेशन के बेंच पर बैसल गाम जाई बला कोनो ट्रेन के एबाक प्रतीक्षा क' रहल छी।

दोसर मोड़

भोला बाबू आई बेचैन छथि आ बेचैनी के कारण छनि पंचायत के अनुसूचित जाति के लेल रिजर्व भ' जायब। एकर त' सीधा मतलब जे भोला बाबू आब फेर स मुखिया नहि बनि सकता! एहनो पहुँच–पैरवी वला नहि छलाह जे कोनो पार्टी एम0पी0/एम0एल0ए0 के टिकट दैन.....एहनो जनाधार नहि छलनि जे निर्दलीय चुनाव लड़बाक हिम्मतो करितथि।

मटरा हट्ठा स' तुरते घुरल छल। कान्ह पर स' पालो उतारि ओ दुनू बरद के खुट्टा स' बान्हि दलानक नीचा मे चुक्कीमाली बैसि गमछा स' मुँह पर हवा कर' लागल – 'आई के गुमकीयो कमाले के हई! जनलेबा समे आबि गेल.....एमकी रौदी पड़तई .....पानिक कोनो लच्छन नई!' ओकर बरबरैनी स' भोला बाबू के ध्यान भंग भेलनि। हड़–बड़ा क' उठि बैसलाह। ईशारा स' मटरा के ल'ग बजेलनि। 'मटरा! एहि बेर मुखिया के चुनाव तों लड़बैं।'

–'हम आ मुखिया! आहाँ मालिक बलू भंगियाईल लगई छी!'

–'हँ रौ मटरा साँचे कहैत छियौ, एहि बेर एहि पंचायत के मुखिया तों बनबैं।

–'आई अहाँ के बलू की भ' गेलै जे एहन भसियैल गप्प करैत छी? हमरा आउर अखरकट्टू.....की जाने गेलियई मुखिया आ भोट–टोट! भोट दिन जा क' ठप्पा लगा अबैत छी सैह बड़...!'

–'नहिं रौ मटरा! से बात आब नहिं रहलई। अई बेर अपन पंचायत रिजर्व भ' गेल छई तोरे सभ जाति लेल। तैं हम अपने आब मुखिया नहिं बनि सकब।'

–'अच्छा त' से बात हई! मुदा हम बलू कोन जोकरक छी जे मुखिया बनि सकब?'

–'तोरा मे सभ सँ पैघ अवगति छौ जे तों अनुसूचित जाति के छैं। तों खाली फार्म पर औंठा छाप द' दिहै ....बस्स.....!

से ठीके मटरा गामक मुखिया बनि गेल। भोलाबाबू के चलती रहिये गेलनि ।

सीमान

आईयो ट्रेन मे कसम–कस्स भीड़; मोटरा–मोटरी से अलग! जे कहुना ट्रेनक डिब्बा मे पैसबा मे सफल भ' गेल छल ओ एहि मनसा मे जेना पूरा ट्रेन पर ओकरे साम्राज्य हुअय आ आन केयो भीतर नहिं पैस' पाबय आ जे बाहर से कहुना भीतर पैसबा लेल रड़धुम्मस केने। मुदा ट्रेन के एहि सभ स' कोन दरकार ओ नियत स्टेशन सभ पर रूकैत सीटी बजबैत सरपट भागल जा रहल छल। भीतर खिड़की लग बैसल एकटा तीस–पैंतीस सालक युवक बाहरक एक–एक टा दृश्य देखि–देखि क' विभोर भ' रहल छल। एक–एक टा दृश्य जेना ओकर आह्लाद के पाँखि लगा देने हो.....बाबू ओम्हर देखियौ ओ गाछ कोना सरपट पड़ायल जा रहल छै!.....हे ओम्हर भैंस पर ओ छौंड़ा कोना निचैन सुतल छै आ भैंस चरि रहल छै!.....हे ओम्हर ओहि कात देखियौ.....आसमान टुटि क' कोना धरती पर खसल छै! ओम्हर देखियौ .... घसबाहिन सभ माथ पर छिट्टा लेने कोना एक पतियानी सँ ठाढ़ छै!..... ओम्हर खेत मे फसिल कोना ओंघरा रहल छई.....!!! ओकर कात मे बैसल ओकर पिता ओकर सभ बात पर मुस्किया क' देखथि आ ओकर पीठ थपथपा क' ओकर उत्साहवर्धन करथि। ट्रेन मे बैसल किंवा ठाढ़ो लोक ओकरा देखि–देखि मुस्किया रहल छल। भीड़क धक्का–मुक्की कम भ' गेल छलै। मुदा सामने के सीट पर बैसल मिसरजी के असहाज भेल जा रहल छलनि। बड़ी काल धरी ओ अपन पोथी मे अपन खीझ नुकबैत रहलाह। जखन ओही युवक के कुतूहल आर बढ़ले जा रहल छलई त' हुनका अपन मोनक भड़ास रोकब कठिन भ' गेलनि – 'आहाँ हिनकर ईलाज कोनो नीक डाक्टर स' कियैक ने करबैत छियनि? समुचित ईलाज भेला स' ई अवश्ये निके भ' जेता।'

'हम हिनकर ईलाजे करा क' दिल्ली स' घर घुमल छी।'

'तईयो.....!!?'

'दरअसल हिनका नव आँखि जे भेटलनिहैं तैं देखि–देखि क' विभोर भ' रहल छथि।'

मिसरजी के हलक सुख' लगलनि। जल्दी–जल्दी सेप घोंट' लगला। अपराध–बोध स' मुँह नुकबैत फेर स' पोथी के पन्ना पलट' लागल रहथि।

मतलब अपन–अपन

अन्ना हजारे के आन्दोलन के समर्थन मे रामलीला मैदान मे उमड़ल अथाह जन–सैलाब मे यदि 'अन्ना की रसोई' के लाईन दूर तक जाईत छलैक त' एहि मे कोनो छगुन्ता के बात नहिं। चौबीसो घंटा आन्दोलन मे जुटल लोक के भूख–प्यास त' लगबे करतई? ..... सभ केयो त' भूख–हड़ताल पर नहिये छल। राम–लीला मैदान मे प्रवेश करैत काल हमर ध्यान सभ सँ पहिने सांप सन टेढ़–मेढ़ एहि लाईन पर पड़ैत अछि .....पैघ हेबाक कारण। हम लाईन पर विहंगम दृष्टि दैत डेग आगू मंच दिस बढ़ेने जाईत छी। ओही भीड़ मे एकटा चेहरा परिचित सन लागल। मोन पाड़य लगलहुँ। एहनो नहि जे ओ छौंड़ा कोनो अस्वाभाविक क्रिया–कलाप सँ हमर ध्यान आकृष्ट केने हो। ओ त' निर्विकार बस जल्दी–जल्दी पैघ–पैघ कौर गिरने जा रहल छल आ कात मे प्लेट फेकि क' पुनः दोसर लाईन मे सन्हिया गेल छल। आब मोन पड़ल.....!! ई त' वैह छौंड़ा छी जे हरसठहे हमरा बस मे दू टा पाथर के आँगुर मे फँसा क' बजबैत गीत गबैत भेटाईत अछि। ओकर स्वर त' कर्णप्रिय नहिं मुदा ओकर अधबोलिया स्वर लोक के मुख पर मुस्कान धरि निश्चये आनि दैत छलैक। गीत ख़तम करिते ओ गायक सँ याचक बनि लोकक पैर छुबि भूख के दोहाई दैत याचना कर' लागैत अछि ... एक रूपया, दू रूपया के! किछु दयावान त' किछु दैयो दैत छैक मुदा बेसी लोक त' अनठा क' दोसर दिस तकैत रहि जाईत छैक। ओ छौंड़ा ताबत तक दोना मे हलुआ आनि क' कात मे निर्विकार भावें खा रहल छल। खा क' दोना फेकलक। आत्मविश्वासक संग दोसर काउंटर पर सँ पानि के पाउच अनलक। पाउच के दाँत स' फाड़ि गट्–गट् पानि पीबि एकटा पैघ ढ़ेकार लेलक। ओकरा चेहरा पर आब एकटा गहींर संतुष्टि के भाव स्पष्ट झलकैत छलैक। ओ पंडालक ओहि कात मे जा' नीचा मे बिछायल दरी के हाथ सँ कनिये झाड़ि क' ओहि पर ओंघरा गेल। आब ओकरा अन्ना हजारे के अनशन वा भ्रष्टाचार के विरूद्ध आन्दोलन सँ कोनो लेना–देना नहिं! हमहुँ मंचक गतिविधि सँ अपन ध्यान हटा ओहि छौंड़ा के गतिविधि के देखैत रहलहुँ। ओहि छौंड़ा के मोन जरूर कहि रहल हेतै जे सभ दिन जँ एहिना होईत रहितै .....!!

अंतराल

ओकरा नहिं जानि अनचोके मे कि भ' गेलै .....मोन घुम' लगलै, चौन्ह आबि गेलै, डेग पताय लगलै! तलमलाईत–तलमलाईत ओ सामने सँ अबैत कार सँ पिचाईत–पिचाईत बाँचल। कारबला एक्के बेर जोर सँ ब्रेक दबेलकई आ कार चों??? ..... क' क' ठामहिं रूकि गेलै। नहिं जानि आई की भ' जईतै! जान बाँचि गेलै, मुदा चोट कम नहिं लागल रहै .....शोणित सँ तुरते सौंसे कपड़ा भीजि गेलै। चारू दिस सँ लोक सभ दौड़ल। कारवला विखिन्न –विखिन्न के गारि पढ़ैत कार के गेट के धड़ाक सँ बन्न करैत बहरायल आ कार के बम्पर के दबा–दबा क' देखलक। तामसे दाँत पिसैत बाजल – 'डेंट कर दिया स्साले ने .....बैंचो को मेरी ही गाड़ी मिली थी मरने को....अंधा!..... कमीना!!..... साला देख कर भी नहीं चल सकता .....!!!' भनभनाईत ओ कार के गेट के धड़ाक सँ बन्न केलक आ कार स्टार्ट क' क' क्षणहिं मे लोपित भ' गेल। ओ आदमी एखनो शोणित सँ लथ–पथ दर्द सँ छटपटा रहल छलै।

एक ठोप इजोत

'परौलवाली! किछु हई पानि पिबै लै त' लाबौ। भुखे–पियासे म'न आहुर भ' गेल! तै पर सँ ई जरलाहा रौद....!' असोथकित गणेशी लाठी कात मे रखैत थुस्स सँ ओसारा पर भूईंएँ मे बैसि गेल आ कान्ह पर सँ गमछा उतारि मुँह पर पंखा कर' लागल। 'काल्हि जे मंगरौनीवाली के राहड़ि दड़ड़ि देले रहियै; उहै दू लप्प खेसारी देले रहै; ओकरे उसना रन्हलियै!' डराइते–डराइते कहने रहै परौलवाली। ओकरा बुझल छै जे गणेशी के खेसारी के नामे सुनि क' झड़की उठै छै ताहू पर उसना! गणेशी के गुम्म देखि ओकर साहस कने बढ़लै –– 'की करतै? ई जान त' कोनो धरानी बचबै के हैये।' गणेशी गुम्मे रहल। यैह गणेशी अपन जुआनी के दिन मे कहैत रहै – 'खेसारी सार बेमारिये के घर.....! ई मनुक्ख के खाई लै थोड़के हई .....? ई हई घोड़ा दाना .....!' सैह गणेशी आई अवस्था आ दिन घटला सँ थारी के कान्ह मे लागल झोर के सेहो औंठा सँ पोछि–पोछि क' चाटि रहल छल। ओकर एना थारी चटनाई परौलवाली के नीक नहिं लागल रहै – 'हाँड़ी मे आर कनी हई .....लेने अबै छियै..... ।' 'नै नै! हमर पेट भरि गेल.....अन्न भगमान होई है .....एकरा बेरबाद नईं करी तैं बलु चाटि क' खा लेलियै .....आब हमरा भुख नै है!' ओ बलो स' ढ़ेकरल। परौलवाली कोना नहिं बुझितै जे ओकर घरवला भुखले छै। ओ प्रतिवाद केलकै – 'एके क'र आर द' दै छियै .... खा लौक। जनी–जाति के की हई .....! एक लोटा पानियो पी क' टेम काटि लेत। मरद के त' पूरा खोराक चाही! हम त' एखने गिरहत ओत' चौका–बरतन कर' जेबै.... गिरहतनी सब किछ ने किछ खुआईये दै हई।'

परौलवाली के मोन पड़लै कतबो लोक कहैत रहलै जे एहन कमासुत छें; दू–दू ज'न के काज एकसरे क' लैत छैं। एखन देह मे बुत्ता छौ निकलि जो दिल्ली–बंबई.....! कमा क' बुर्ज क' लेबैं! गामक दू सेर बोईन स' की हेतौ? मुदा गणेशी कहिया केकरो बात मानलकै? लगलै सभ दिन एहने दिन–दुनियाँ रहतै! से रहलै कहाँ? विपत्तिक जखन पहाड़ खसै छै तखन केयो माथ पर हाथ देब' बला नहिं रहैत छै। कहैलै त' भेलै पाँच टा धिया–पुता; मुदा जीलै कहाँ एको टा! कबुला–पाती, ओझा, भगता सभ व्यर्थ! बुढ़ारिक संग समांगो खसैत गेलै.... ऊपर सँ दम्मा! जखन देह मे बुत्ते ने तखन ज'न लै के अढ़बितै? साँझक–साँझ बीत' लगलै। ओ त' परौलवाली जान उपछि क' कहुना कुटान–पिसान क' क' दुनू के प्राण बचेने छै। गणेशी के केयो कहलकै – गरीबी रेखा मे नाम लिखा जेतौ त' सरकार दिस सँ खरात आ ईंद्रा–आवास सेहो भेटतौ। तोरा सन निपुत्तर, असक्क, निर्धन के सरकारी मदति नहिं भेटतै त' ककरा भेटतै? गणेशी के मिझैल आँखि मे फेर सँ आशा के एकटा किरण फुटलै। गामक मुखिया–सरपंच के पैर–दाढ़ी पकड़ैत आ ब्लॉक दौड़ैत आई छओ मास बीति गेलै। जेठक प्रचंड तिक्ख रौद मे आई ओतहि सँ घुरल छल। परौलवाली ल'ग मे ठाढ़ भ' क' आँचर सँ हाथ पोछैत पुछलकै – 'आईयो काज सुतरलै कि ओनाहिते घुरि ऐल?'

'परौलवाली! आई एकटा नवका बात बुझलियै! अपना गामक भुवनबाबू, जग्गू पांड़े, सोभन जादो.....सब बड़का–बड़का कोठा–कोठी बला सभ सरकारी खाता मे गरीब छै.....अपना आउर नै! अपना आउर भुखलो छी तैयो सरकार के लेल धनीके छी!' कुटिल मुस्की पसरि गेलै गणेशी के ठोर पर।

बाटक बात

ई पट्टीदारी झगड़ा पुस्तैनी चलि आबि रहल छई। महेशक बाप आलिशान चौघरा हवेली बना त' लेला मुदा रस्ता एक–पेरिया आ आस पासक सभ जमीन गणेशक बापक! महेशक बाप लाख प्रयत्न केला मुदा गणेशक बाप कौरव जकाँ एको ईंच भूमि रस्ता लेल देबा लेल तैयार नहिं। समय त' कहुना बितले जाईत छलै; मुदा महेश के चिंता ध' लेलकनि बेटी के वियाह तय भेलाक बाद। लड़का के बाप कहलखिन – 'स्वयं लड़के के जिद्द छनि जे वियाह गामे सँ करी। बालपने सँ गाम सँ बाहर रहितो हुनका गामक माटि–पानि, अपन बोली सँ बड़ स्नेह। ओ कहैत छथि जे वैवाहिक विध–पुराण, शोभा–सुन्दर, गीत–नाद जे गाम मे भ' सकैत अछि से शहर मे कहाँ? तैं हम विवश छी।' महेश निरूतर घर घुरि आयल छलाह। एहन संकीर्ण रस्ता सँ बर–बरियाती दरबाजा तक कोना पहुँचत? बर के कोना पैरे दरबाजा तक ल' जेताह?? ओम्हर घरक लोक सभ वियाहक ओरिआओन मे व्यस्त.....दनौरी.....तिलौरी खोंटल जाईत; रंग–विरंगक अँचार सुखाओल जाईत; जन–मजदूर साफ–सफाई, घरक रंग–टीप मे व्यस्त; एम्हर महेशक मुँह मे लावा–फड़वी होईत। हुनकर मानसिक तनाव आब व्यवहारो मे व्यक्त होमय लगलनि। कनियाँ बड़ स्नेह सँ पुछ' एलखिन जे दीप बड़कीये पुतोहू लेसि लेतीह ताहि पर ओ तेना खौन्झा क' बजलाह–'जे करक हुअय से अपने करू ..... हमरा की पुछैत छी?' ताहि पर बेचारी कतेक काल तक घर बन्न क' क' कनैत रहलीह। महेशक ई व्यहार परिवर्तन सभ अकानि रहल छल। लोक के लगलैक बेटी विदाई के सोचि–सोचि क' महेश परेशान भ' रहल छथि।

रातिक निस्तब्धता चहु धरि पसरल रहैक। बस कखनो काल टीटही के स्वर वातावरण के निस्तब्धता के भंग क' दैत छल। डंडी–तराजू माथसँ किनये पछिम झुकल छल। ओ दालानक आराम कुर्सी पर आबि क' बैसी गेलाह। एतेक धन–सम्पति आई कोनो काजक नहिं! तामस उठलनि अपन बाप पर जे बिनु बाटे के एतेक पैघ हवेली ठाढ़ क' लेलनि – 'हुनका की बिगड़लनि? एक–पेरिये पर चलि क' जीवन गुदस्त क' लेलनि! भोग' त' हमरा पड़ि रहल अछि।' तामस वरो पर कम नहिं उठलनि – 'सौंसे दुनिया चान पर जा रहल अछि आ ई गामे के नांगरि धेने छथि.....! लिख लोड़हा, पढ़ि पाथर!' सोचिते–सोचिते भोरका शीतल पछबा वसात मे आँखि लागी गेलनि। सहसा कोनो आहट पर धड़–फड़ा क' उठला.....गणेश पूजा हेतु फूल तोड़ि रहल छलाह। ओ वेग सँ उठला आ गणेश के पैर छुबि क' बजलाह – 'भैया! भारतीक वियाह अगिला मासक पंद्रह तारीख क' तय क' लेलियै। आब त' परिवार मे सभ सँ श्रेष्ठ अहीं छियै.... जे करबै से अहीं करबै।' सुनि क' गणेश सकपका गेलाह मुदा फेर अपना के सम्हारैत जोश मे बजलाह – 'अवश्य! बेटी–भतीजी मे कोन अंतर? भारती तोरे नहिं, हमरो बेटी छी ..... हमर अपन खानदानक मर्यादाक प्रश्न अछि।' जन–मजदूर सभ अपस्यांत छै बाट के चौड़ा क' क' खरंजा बैसाब' मे। घर–परिवार के संग–संग पाहुनो–परख सभ वियाहक ओरिआओन मे व्यस्त.....आब दिने कहाँ छै वियाह के .....परसूये त' बरियाती एतै।

धुँआईत सिगरेट

ओहि दिन जे भैया फोन पर कहलनि 'पलखति निकालि क' बंगलोर आबि जो' – ओहि स्वर मे खिन्नता बुझायल। हम कतबो कारण पुछलियनि मुदा ओ एतबे कहैत रहलाह 'पहिने आने तखन गप्प हेतै'। ओना त' भैया के व्यक्तित्वे छनि जे ओ आधे बात बजैत छथि आ आधा पेटे मे रखैत छथि। तथापि आई हुनकर भहड़ल स्वर किछु असामान्य सन लागल। भौजियो सँ पुछलियनि त' हुनको वैह जवाब जे 'आऊ ने तखन बात हेतै'। भैया के भहड़ल स्वर! बंगलोर एबाक आदेश!! घबरेबाक सेहो काज नहिं !!! कोन बात भ' सकैत छै?

रवि दिन हेबाक कारणे भैया डेरे पर रहथि। भैया–भौजी के पैर छुबि हम सोझे अपन बढ़ैत व्यग्रता पर एलहुँ। भैया हँसैत बजलाह 'बात हेतै ने निचैन सँ! एखन तों बाटक झमाड़ल छैं.....नहा–धो,खा–पीक'आराम क'र।' कहि क' ओ भौजी दिस तकलथि। ईशारा बुझि भौजी हमर बैग उठा क' भीतर चलि गेलीह। हम हुनका पाछु–पाछु रूम मे गेलहुँ आ बजेबाक कारण पुछलियन। ओहो बात टालैत बजलीह – 'जल्दी सँ आहाँ नहा–धो क' फ्रेश भ' जाऊ....हम जलखई निकालैत छी।' हमर व्यग्र मोन प्रयोजन तलाशैत दिन बिता देलक। राति मे भोजनोपरांत टहलय निकललहुँ तखन भैया कहय लगलाह – 'की कहियौ! मोनू सभ संस्कार–मर्यादा बिसरि गेल। आब मायो–बाप के धाख नहिं करैत अछि। एहन पुत्र सँ त' लोक .....!' – कहैत–कहैत गारा–बकोर लागि गेलनि। कतेक सांत्वना देलियनि तखन ओ कहलाह – 'हमरा सभ के त' अपन बाप–पित्ती के आगू कल्ला तक नहिं अलगैत छल आ मोनू हमरा आगू मे शान सँ सिगरेट फुकैत छथि।' हम चिंता मे पड़ि गेलहुँ। मोनू एहन उच्छृंखल कोना भ' सकैत अछि? एहन संस्कारी आ तीव्र–बुद्धी बालक मे एहन परिवर्तन कोना?.....कुसंगति वा महानगरीय कुसंस्कृतिक प्रभाव.....?

टहलि क' घर एलहुँ तखन मोनू अपन रूम मे पढ़ि रहल छल। हम सीधे ओकरा लग गेलहुँ। ओकर पढ़ाई, कैरियर, दोस्त आदि पर चर्चा करैत हम मूल प्रश्न पर एलहुँ – 'मोनू! ई हमरा की सुनबा मे आबि रहल अछि....?'

–'की....?' ओ सशंकित भ' गेल छल।

–'आहाँ अपन कुल–खानदानक सभटा संस्कार–मर्यादा के तिलांजलि.....!'

–'से कोना?' ओ सम्हरि क'बैसि गेल छल।

–'जाहि भैया के समक्ष हम सभ खखसबो ने करैत छी आहाँ हुनके आगू निधोख सिगरेट

पिबैत छी! केयो कतबो पैघ पदबी पाबि जाय.....ओकर बाप–पित्ती भने निम्न पद पर होई .....ओकरा ओकर सम्मान आ आदर करहि के चाही .....यैह हमरा सबहक संस्कार रहल अछि।'

मोनू के चेहरा पर मुस्की पसरि गेलई। हमरा ई अनसोहांत सन लागल।

–'चच्चा! आब आहाँ सँ की चोराऊ! इंजीनियरिंग कॉलेज मे राति–राति भरि जागि क' पढ़ाई करय पड़ैत छल। संगी सभ के देखा–देखी सिगरेट के एक–आध कश लगा लैत रही जे राति मे आँखि नहिं लाग' दैत छल। एखनो एकर कोनो आदति नहिं अछि; मुदा कखनो कोनो टेंशन रहैत अछि त' पिया जाईत अछि।'

– 'तकर मतलब त' ई नहिं जे बापो–पित्ती के लोक धाख नहिं करय?'

– 'नहिं चच्चा! बात भेलै जे हम ओहि दिन ऑफिस सँ घर घुरबा काल गुमटीसँ सिगरेट कीनि क' सुनगेनहें रही की तखने अनचोके मे पापा अपन दोस्त सबहक संग गली सँ निकलि क' रोड पर हमरा सोझाँ आबि गेलाह। ओहि समय मे हमरा लग दुईये टा विकल्प छल –– जड़ैत सिगरेट के कतहु नुका ली वा निचा फेक दी। कतहु नुकबितौं त जड़बाक खतरा छल आ फेकितहुँ त' ओ देखिये लितथि। ओनाहो ओ हमरा सिगरेट पिबैत देखिये नेने छलाह तैं सोचलहुँ जे कात–करोट सँ निकलि जाई।' ओ कुर्सी सँ उठि क' पुनः बाजल– 'हमरा जनैत त' पापा के स्वयं नजरि बचा क' ओहि ठाम सँ निकलि जेबाक चाहैत छलनि।' कहैत ओ हमर प्रतिक्रिया जनबाक हेतु हमरा दिस तकलक। हम निरुत्तर घरक देवाल के जोहि रहल छी।

एक मुट्ठी माटि

श्राद्धक क्रिया–कर्म, भोज–भात नीके नाँ समाप्त भेल। कर्ता माछ–मासुक परात जे कर–कुटुम्बक झखरब प्रारंभ भेलै से सत्यनारायण भगवानक पूजा समाप्ति तक पूर्ण भ' गेलै। आई त' समूचा घर खाली भ' गेलै.....बाँचि गेल दुहू भाईक परिवार टा। ओहो सभ काल्हि–परसू तक चलिये जेताह। घर मे स्थायी रूपें ताला लगा शहर लौटि जेबा सँ पहिने दुहू दियादिनी के नजरि गड़ल छलै मायक संदूक पर जाहि पर एखनो दू टा बड़का ताला लटकि रहल छल। ओना त' संदूक मे की छै से त' केयो नहिं देखने छल; मुदा अंदाज लगबैत छल जे बहुमूल्य वस्तु–जात हेबे करतै। नहिं त' माय ओकर चाभी के ओतेक संयोगि क' कियैक राखैत? बड़का पीऊसा त' हँसी मे कहनहों रहथिन –'ताला फोलि क' देखियौ ने जे बुढ़ही कोन खजाना छोड़ि गेली है?' मुदा समय साल के देखैत ओकरा सभ के उचित नहिं बुझैल रहै जे सबहक बीच मे ताला फोलय।

घर खाली भेलाक उपरान्त घर के भीतर सँ बन्न क' क' ताला फोलल गेल..... बाबूजीक फ्रेम लागल फोटो.....हुनकर पुरनका पैंट–शर्ट–कोट.....बंद पड़ल एच0एम0टी0 जनता घड़ी.....मोचड़ायल ललका बनारसी साड़ी.....!!! बड़का भाय एक–एक क' वस्तु सभ निकालने जाईथ आ बड़की भौजी मुँह बनबैत उठा–उठा क' नीचा फेकने जाईथ। 'हे ओम्हर ओ की छै?' छोटकी कनियाँ बजलीह त' सबहक नजरि उत्सुकता मे ओम्हरे गेल। 'धुत! एहि मे माटि छै!' – बड़का भाय खिन्न भ' वितृष्णा मे पोटरी के दूर फेक' लगलाह कि छोटका भाय फुजल पोटरी सँ झहड़ैत माटि के आँजुर मे लैत पोटरी हुनका हाथ सँ लपकि लेलक। पोटरी के छाती मे सटा क' आँखि बन्न केने ओ ठाढ़े रहि गेल। 'बुढ़ही यैह धरोहर छोड़ि गेलीहै बेटा–पुतोहू लेल.....गदौस फाटल–पुरान कपड़ा आ धुरा–माटि! कहू त' यैह सम्पति के रक्षा मे बुढही संदूकक चाभी के दाँत लगा क' राखैत छली.....! मतिये विशेष भ' गेल छलनि; नहिं त धुरा–माटि, गुदड़ी–चेथड़ी केयो संदूक मे राखय? .....पहिने बुझल रहैत त' जान उपछि क' किन्नहु ने श्राद्ध मे खरचितौं.....!!' बड़बड़ाईत, तामसे पैर पटकैत बड़की कनियाँ धम्म सँ केबाड़ फोलि बहरा गेली। हुनका पाछू सभ बहरा गेल; मुदा छोटका भाय जड़वत ठाढ़ छल। ओकरा आँखि सँ दहोबहो नोर बहि रहल छलै। एक–एक टा बीतल घटना सभ छाया–चित्र जकाँ ओकरा आँखिक आगाँ नाचैत रहलै..... माय बाबूजी सँ कतेक प्रेम करैत छलीह.....बिनु बाबूजी के खयने एक घोंट जलो नहिं पिबैत छलीह। पुस्तैनी चीज के माय कतेक महत्व दैत छलीह! कतेक ईच्छा छलनि जे गामक पुस्तैनी घरारी पर घर बना क' रही। मुदा पट्टीदार सभ नहिं होमय देलकैन। बाबूजी त' नोकरिहारा.....ताहू मे महाशुद्ध! झगड़ा–झंझट त' दूरक वस्तु.....ककरो सँ मुँह उठा क' बजनाहरो नहिं। अपन पुस्तैनी घरारी पर हक़ के लेल लड़बा के बदला मे ओ माय के बुझा क' शहरे मे घर बना क' रहि गेलाह। क्रमशहे दुहू

भाई के नोकरी दोसर शहर मे लगलै आ ओ सभ ओतहि के भ' क' रहि गेल। मुदा माय–बाबूजी अपन बनाओल घर छोड़ि बेटा–पुतोहू संग रहब स्वीकार नहिं केलनि। बाबूजीक स्वर्गवासो के बाद माय ओ घर नहिं छोड़लनि।

बाबूजीक स्वर्गवास के बाद माय एक बेर फेर सँ पुस्तैनी घरारी हेतु प्रयास केलनि। ओहि बेर मायक संग यैह गाम गेल रहै। पट्टीदार सभ एक लोटा पानियो सँ नहिं पुछलकनि। मायक कतेक मोश्किल सँ उपरायल सबूत — जमीनक कागज़ ओ सभ देखबो लेल तैयार नहिं। एके स्वर मे बाजल जे बाबा अपन जीवते घरारी ओकर समहक पुरखा के लिखि देने रहथिन। आब एकेटा उपाय बाँचल छल – मामिला–मोकदमा! मुदा एहि सँ बाबूजीक आत्मा के ठेस लगितनि यैह सोचि माय चुप्प रहि गेल छलीह। घुरती काल मायक आँखि सँ अविरल बहैत नोर आ घरारी पड़हक़ एक मुट्ठी माटि उठा क' माथ लगा आँचर मे खूँट बान्हब ओकरा आँखिक आगू जीवंत भ' गेल छलै।

कचोट

'डिवॉर्स इज ग्रांटेड। नाऊ यू बोथ आर लीगली सेपरैटड फ्रम ईच अदर।' कहैत जज अदालत के कार्यवाही समाप्त क' उठि गेलाह। ओ मीरा दिस तकलक। मीरा के नजरि सेहो एक पल लै ओकरा दिस उठलई; मुदा दोसरे पल ओ अदालत सँ जल्दी सँ बहरा गेली। ओ ओत' ठाढ़े रहल .....आई स्थिति कोना एकाएक बदलि गेलै? एक बेर त' लागल रहै जे ओ केस हारि जायत। मीरा के वकील केहन जोरदार बहस करैत कहेने रहै – 'योर आनर! वास्तविकता त' ई अछि जे मिस्टर विकासक उद्देश्य हमर मुवक्किल सँ तलाक ल' क' अपन प्रेमिका संग विवाह करब अछि। एहि घृणित लक्ष्य सँ ओ हमर मुवक्किल के तरह–तरह सँ प्रताड़ित करैत रहलाह.....मारी–पीट, गारि–गंजन .....!'

'हमरा क्षमा करब जज साहेब! ई बात एको मिसिया सत्य नहिं अछि। सत्य त' ई अछि जे हमर पति देव–तुल्य छथि आ हमरा आई तक कोनो अधलाह वचन तक नहिं कहलनि। ओ तलाकक अर्जी कियैक देलनि से वैह बता सकैत छथि।' मीराक एहि वक्तव्य पर समूचा अदालत स्तब्ध रहि गेल छल।

पाशा त' तखन पलटि गेलैक जखन एकर वकील कहने रहै – 'मी लॉर्ड! हमर तलाक मँगबाक मुख्य कारण अछि श्रीमती मीरा के चरित्रहीनता आ व्यभिचार जे हिन्दू मेरिज एक्ट –1955 के धारा–13 के अंतर्गत तलाकक एकटा पैघ आधार अछि। अपन जीवन–संगिनी जकरा पर हमर मुवक्किल अपन जान छिड़कैत छथि, जकरा प्रतिवादी स्वयं भरल अदालत के सामने मे स्वीकार केलनि अछि, तकर विश्वासघात केयो कोना सहाज क' सकैत अछि मी लॉर्ड? हमरा लग एहन कैकटा दृष्टांत अछि जे प्रतिवादी के चरित्रहीनता आ व्यभिचार के सिद्ध करत....' एहि सँ पहिने कि एकर वकील किछु आगू बजितथि, मीरा एकदम सँ उठि क' ठाढ़ भ' कहने रहई – 'जज साहेब! हम अपन पति के तलाक देबाक हेतु तैयार छी।' ओकरा कचोट होमय लगलैक जे मीराक चरित्र पर एहन पैघ लांछन लगा क' ओ नीक नहिं केलक। मीरा त' सत्ये कहने रहैक ..... ओ त' एकरा देव–तुल्य बुझिते छलैक। मुदा तलाकक दोसर कोनो आधारो त' नहिं छलैक एकरा लग? एतेक दिनक बादो ई अपन प्रेमिका के नहिं बिसरि पाबि रहल अछि।

घर आबि ओ पलंग पर धम्म सँ पसरि गेल। सामने के देवाल पर मीरा के बनाओल पेंटिंग पर ओकर ध्यान गेलै। कतेक ख्याल राखैत छलैक मीरा एकर! मोनो ने हेतैक जे मीरा के एलाक बाद एकरा कोनो वस्तु अपने सँ लेब' पड़ल होई.....माँगबा सँ पहिनहिं वस्तु हाजिर। लुड़ि–बितपनि, आवेश–बात सभ मे मीरा आगू। भरि गामक लोक परतरि देई जे पुतोहू हुअय त' भोलाबाबू सन। घर–परिवार, आस–पड़ोस, जन–हरवाह सबहक प्रिय बनि गेल छलीह मीरा। गाम–समाज जे तलाकक केस द' सुनलक से थू–थू

कर' लागल। बाप लोक लाजें आब अपनो दालान पर एबा मे सकुचाईत छथि। मायक आँखिक नोर सँ आँचरक खूँट सदिखन तितले। एहि सबहक जिम्मेदार त' यैह अछि। मीरा त' वीरांगना निकलक ....अपन चरित्र पर लांछना सुनबा सँ पहिनहि ओ तलाक के पेपर पर दश्तखत क' देलक। अपन कलुषित चरित्र पर एकरा धिक्कार हुअय लगलैक। प्रेमिका के कॉल बेर–बेर आबि रहल छलैक। मोबाइल स्विच–ऑफ क' क' कात मे फेकि देलक। मीराक कपड़ा–लत्ता, वस्तु–जात सभटा ओहिना राखल.....जेना ओ एखने कोठली सँ बहरायल होथि। माय चौकठि लग अपन आँचर सँ नोर पोछैत भरल गरा सँ कहलखिन – 'बौआ! आहाँ अपना पर ध्यान राखब। सुनैत छियैक कनियाँक भाय आहाँके जान लेबाक सप्पत खेने अछि। गोनमा के माय कहैत रहय जे ओ सरधुआ एक दिन बन्दूक ल' क' आहाँ के गोली मारबाक लेल निकलैत रहय मुदा कनियाँ ओकर पैर गछाड़ि लेलकै जे भैया एहन पाप जुनि करू। एखन त' कम–सँ–कम हम अहिबाती छी.....सिन्दूर–चूड़ी पहिरैत छी.....माछ–मासु खाईत छी। आहाँ के एना केला सँ हमर ई सभ त' छुटबे करत अहूँ फाँसी चढ़ि जायब। हुनका कर' दियनु ओ जे करैत छथि। अहुँ के जँ हम भार बुझाईत होई त' छोड़ि दिय हमरा। दुनियाँ बड़की टा छै.....हम कतहु कुटाओन–पिसाओन क' क' अपन पेट पोसि लेब।

ओ ठामहिं ठाढ़ भ' गेल। 'माय हम सीरपुर जा रहल छी।' कहैत ओ घर स' बहरैल आ जाबत माय कोनो अनिष्टक आशंका सँ ओकरा रोकितथिन ताबत ओ मोटरसाईकिल स्टार्ट क' क' आँखि सँ दूर भ' गेल छल।

मास्टर साहेब

परोपट्टा भरि मे मास्टर साहेब सँ विख्यात हरेबाबू आब नहिं रहलाह ई समाचार सुनिते भरि गामक लोकक बीच मे हुनक व्यक्तित्व आ कृतित्वक चर्चा होमय लागल आ लोक हुनकर अंतिम दर्शन हेतु पहुँच' लागल। मास्टर साहेब हमरो सभ के पढेने रहथि। पढ़बितथि कोना नहिं? ओ गामक स्कूलक मास्टर आ हम ओहि गाम के बच्चा। कृतज्ञ मोन कहलक जे गुरूजी के अंतिम दर्शन क' क' श्रद्धांजलि द' आबी। ओम्हर सँ आलोक के आबैत देखि सोचलहुँ जे एकटा संगी भेटल। मुदा ओ छुटितहिं बाजल – 'धुर्र! हुनका देख' के जैत? तेना क' पढ़ेलनि जे कतहु गोड़ा नहिं बैसल।' सुनि क' कोना दन लागल। मुईनाहर के बारे मे एहन वक्तव्य अछि त' संस्कार–विरूद्धे।

पढ़बैत त' मास्टर साहेब ठीके नहिं छलखिन। क्लास मे आबि केकरो ठाढ़ भ' क' किताबक कोनो चैप्टर जोर सँ पढ़ई लै कहि क' अपने टेबुल पर पैर पसारि निश्चिन्त सँ फोंफ कटैत छलाह। विद्यार्थियो सभ के नीक .....स्वतंत्रता जे भेट जाई। मुदा जखने केयो खटर–पटर केलक आ हुनकर निन्न मे विघ्न भेल की एक दिस सँ सभ पर हुनकर 'दुःख हरणी' सटा–सट् बजर' लगैत छलै। ताहि डरे केयो सांसो ने जोर सँ लैत छल।

आलोक पर मास्टर साहेब ख़ास ध्यान राखथि। ओ अपन ज'न, हरबाह के पनपियाई स्कूले ल' आबथि आ आलोक के कहथिन द' आबै लेल। ओ बहन्नो बनबै त' कहथिन – 'तों जा ने! पांच मीनट सँ कि बेसी लगत'? ताबत हम पढ़ाई रोकने छी।' आ ओकरा गेलाक बाद कहथिन – 'भने बैलेलहुँ! क्लास मे रहैत त' ने अपने पढ़ैत ने ककरो पढ़' दैत।' पनपियाई पहुँचेनाई के अतिरिक्त आलोक मास्टर साहेब के कपड़ा धोनाई, पैर जतनाई, चाह–पान अननाई..... सभ काज स्कूल के समय मे कैल करय। ओहि दिन मास्टर साहेब क्लास मे अबिते आलोक के ठाढ़ करा क' कहलखिन – 'काल्हि तोहर बाबू भेटल छलाह। कहलनि जे हमर विद्यार्थी हिन्दी मे कमजोर भेल जा रहल अछि से आहाँ कनेक ध्यान दियौ।' मास्टर साहेब फेर आदेश दैत बजलाह – 'काल्हि साँझ सँ तों हमरा ओत' आबि गेल करह। सौंसे क्लास छगुन्ता मे जे मास्टर साहेब क्लास मे कहियो नहिं पढ़बैत छथिन से आब आलोक के ट्यूशन पढ़ेथिन। विद्यार्थी सभ चौल करय लगलै – 'आब त' आलोक हिन्दी के प्रकांड पंडित भ' जायत! ..... आन्हर गुरू, बहीर चेल!! ..... एतेक दिन मास्टर साहेब के काज केलैं आब मास्टरनियो के काज करिहैं !!!' ....आर की की नहिं।

तामसे बिक्ख भेल आलोक बाबू स' पुछलकनि– 'आहाँ कहलियनि हैं मास्टर साहेब के हमरा ट्यूशन पढ़ा दै लै? स्कूल मे त' ओ कहियो पढ़ेबे ने करैत छथिन; हमरा ओ ट्यूशन की पढ़ेता?' पहिने त' ओकर बाबू किछु बुझिये ने पौलखिन फेर स्मरण क'

क' कहलखिन – 'अरे! काल्हि सांझ चौक पर चाह पिबैत रही ओहि खन मास्टर साहेब सेहो ओत' आबि गेलाह। आग्रह क' क' हुनको चाह पियेलियनि। ओ अपने कह' लगलाह जे आहाँ के विद्यार्थी हमर विषय मे बड़ पिछड़ल अछि। ओकरा हमरा ओत' पढ़य लै पठा दियौ। हम त' हँ हुँ किछु नहिं कहने रहियनि।' से मास्टर साहेब आब नहिं रहलाह। हुनकर अंगना मे लोकक आबा–जाही बढ़ले जा रहल छल। सभ के आई हुनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व स्मरण भ' आयल छलै; से त' समयोचिते!

भोरक साँझ

दरभंगा मेडिकल कॉलेजक जूनियर डॉक्टर सभक फेर सँ हड़ताल पर चलि गेला सँ अस्पतालक चिकित्सा–व्यवस्था चरमरा गेलै। पहिने सँ भर्ती मरीज के केयो तकतिहान केन्हार नहिं ..... नव मरीजक भर्ती के के कहय ....आउट डोर तक सुन्न पड़ल। नियमित डॉक्टर के त' अपन क्लिनिक आ नर्सिंग होम सँ पलखति नहिं .... हॉस्पिटलक मरीज के के ईलाज कर'? जकरा लग कोनो साधन छलैक से निजी क्लिनिक सभ मे अपन मरीज के ल' गेल .....जे असमर्थ छल से भाग्य भरोसे घर घुरि गेल। मुदा किछु लोक एहनो छल जे हड़ताल टुटबा के आश पर ओतहि डटल रहल। एहने एकटा स्त्री गायनिक वार्ड मे प्रसव–पीड़ा सँ छटपटा रहल छल। असह्य वेदना सँ छटपटाईत ओहि स्त्री के बेडक दुहू दिस ओकर घरवाला आ सासु तकतिहान मे ठाढ़ जे कहीं बेड पर सँ गुडुकि क' खसि ने पड़ई। दिन त' कहुना बीतल जाईत छै; मुदा एहन राति पहाड़ भ' जाईत छै। ओकर बढ़ैत प्रसव–पीड़ा के कारणें निकलैत चित्कार सँ लागै जे आब ओकर प्राण निकलतै त' तब! देवता–पितर के गोहरेनाई, कबूला–पातरि किछु काज नहिं आबि रहल छलै। आब त' ओकर सौंसे देह पीयर होमय लागल छलै.....ठोर पर पपड़ी पड़ी गेल छलै....हलक सुखा गेल छलै। निःसहाय दुहू माय–बेटा अनिष्टक आशंका सँ सिहरि गेल, सौंसे संसार ओकरा निष्ठुर लागि रहल छलै।

ओ अपन कान्ह पर केकरो हाथक स्पर्श सँ पाछु तकलक। 'भाई हम दुपहरिये सँ हिनकर पीड़ा देखि रहल छी। आब हिनकर कष्ट नहिं देखल जा रहल अछि तैं कहैत छी..... एहि ठाम अनेरे राखि क' हिनकर प्राण कियै लैत छियैन?..... हिनका कोनो लेडी डॉक्टर लग शिघ्रे ल' जाऊ; नहिं त' हिनकर प्राण बाँचब असम्भव। भाई! ..... पाई के नहिं देखियौ! ..... जिनगी–जान रहत त' पाईयो भ' जैत। हमर बात मानू आ ल' चलु हिनका डॉक्टर लग.....हम एकटा नीक लेडी डॉक्टर के जनैत छियनि। ओ हमरा कहने फीसो कम क' देतीह।' ओ जाबत किछु बजितै ताहि सँ पहिने ओ एकटा ऑटोवाला के ईशारा सँ बजा क' ओहि स्त्री के सहारा द' क' ऑटो मे चढ़ा देलकै। अगिले पल ओ सभ एकटा नर्सिंग होम मे छल। डॉक्टर–नर्स ईलाज मे जुटि गेलै। तुरत ऑपरेशन के व्यवस्था भेलै आ घंटो ने बीतल हेतै की नर्स आबि क' कहलकै – 'मधुर लाऊ ग' बेटा भेल!..... माय–बच्चा दुहू बाँचि गेल सैह.....!' ओकर जान मे जान एलै। थुल–थुल, गोल–मटोल नवजात के कानब आ परसौती के पीयर, पपड़ी पड़ल ठोर पर पसरि आयल मुस्की ओकर मन–प्राण के असीम आनंद सँ भरि देने छलै।

मुदा एहि आनंद के दाम छलै मात्र दस धूर बाँचल घरारी जाहि मे तरकारी उपजा ओ तीन जनक पेट भरबाक प्रयास करैत छल।

खंड – खंड जिनगी

श्रांत–क्लांत ऑफिस सँ जखन अबैत छी त' घरक केबाड़ पर लटकल ताले पर पहिल नजरि पड़ैयै .....एक टा वैह त' हमर प्रतिक्षा मे रहैत अछि! साँझक ललछौंह अन्हारो मे बुझैल जे केयो केबाड़ लग ठाढ़ अछि। हम सोच' लगलहुँ ..... कोनो क'र–कुटुंब त' बिना पूर्वसूचना के नहिंये अबैत छथि .....फेर ई के हमर प्रतिक्षा मे ठाढ़ अछि? बेतरतीब बढ़ल केश–दाढ़ी.....झोलंगा कुर्ता–पैजामा.....कान्ह मे भूदानी झोड़ा टांगने .....अरे! ई त' अजय अछि! हमर करेज दहलि गेल। एहि बेर पटना गेल रही त' सुनने रही अजय पढ़िते–पढ़िते बताह भ' गेलै! बड़ ड'र लगैयै हमरा बताह सँ ..... नहिं जानि कखन कोन उपद्रव क' बैसै? ताबते अजय हमरा कसिया क' पजिया लेलक आ चारू कात नचाब' लागल – 'पकड़ेलैं ने बाऊ!.....तों लाख अपन अता–पता नुकेने र'ह; मुदा हमरा सँ बाँचि क' रहबैं कत'?' हमरा लागल हम असक्क होई .....कोनो टा जान देह मे बाँचल नहिं हुऐ। ओकर देहक भभकैत गंध सँ जी ओकियै लागल। कहुना क' हम शक्ति जुटा क' ओकर भुजपाश सँ अपना के मुक्त केलहुँ। लागल केयो एना देखि लेत त' की सोचत। घर मे घुसिते ओ घरक एक–एक कोणा, चीज–वस्तु सभ के निहारैत गुम्म ठाढ़ रहल। 'अपन घर मे बैस' लै नहिं कहबैं? ..... खैर, कोनो बात नहिं! हम अपने बैसि जाईत छी' कठहँसी हँसैत ओ थुस्स सँ देबाल सँ ओंगठि क' निच्चे मे बैसी गेल। ओकर पीयर ढ़ाबुस दांत हमरा अनश्रद्ध सन लागल। 'हम आब जमीन सँ जुड़ि गेल छी.....तैं जमीने पर बैसैत छी....जमीने पर सुतैत छी।' स्पष्टीकरण देलक ओ। फेर बेरोकटोक बजैत रहल.....सभ विषय पर.....लोक–वेद, आचार–विचार, नीति–राजनीति, देश–दुनिया .....अर्र–दर्र ....की कहाँदन .....!! सुनैत–सुनैत कखन हमर आँखि लागि गेल; नहिं बुझलियै! आँखि खुजल त' देखैत छी ओकरा देबाल सँ ओंगठि क' चाय सुड़कैत। हमरा ऑफिस जाई के छल। एहन बताह के भरोसे घर छोड़ि क' कोना जइतौं? कतेक समझा–बुझा क' ओकरा घर घुरि जेबाक लेल मनेलौं आ रेलवे स्टेशन लेल बिदा क' क' ऑफिस चलि गेलहुँ। राति मे बिछान पर गेले रही की फोन ऐल – ' हेलो ! राजीव बोल रहे हो जी!'

– 'हाँ।'

– 'आपका दोस्त अजय बिना टिकट ट्रेन मे सफर करते हुए अरेस्ट हो गया है। आप जमानत दे कर उसको छुड़ा सकते हो। '

– 'कौन अजय?'

– 'आप अजय कुमार को नहीं जानते? उसने आपका ही कांटेक्ट नंबर दिया है। ये लो आप खुद ही इस से बात कर लो।'

– 'अरे मैंने कहा न मैं किसी अजय–वजय को नहीं जनता।' – कहि क' हम फोन राखि देने रहियै। पसेना के बुन्न हमर चेहरा पर चुहचुहा गेल छल। लागल धरती दरकि गेल होई।

नया साल

शहर कि आब त' गामो मे नव–वर्ष मनेबाक चलन जोर पकड़ि लेने छैक। चारू कात पसरल उल्लास, उमंग, आनंद .....कोनो पाबनि–त्यौहार स' कम नहि। लोक सभ पुरनका साल सँ पिण्ड छोड़ा नवका साल के हपसि क' गारा लगेबाक हेतु व्यग्र....केयो ककरो सँ पाछाँ नहि रह' चाहैछ। धूम–धड़क्का, नाच–गान, मौज–मस्ती ..... जकरा जे मोन होईछ से करैछ।

शहरक एहि उल्लास के नहि बुझि पाबि पहिल बेर शहर आयल शिबना के सात सालक बेटा पुछिये देलकै – 'बाबू हौ! आई एतेक लोक सभ रस्ता पर फटक्का आऊर कियै छोड़ैत हई? ककरो बरियाती जाई हई कि?'

– 'नई रौ, आई लोक पुरनका साल के बिदा क' क' नवका साल के तैयारी क' रहल छै।'

– 'अपनो आऊर नया साल के तैयारी कियै ने करै छह? कखनी एतै अपना आऊरक नया साल? हमरो फटक्का सभ कियै ने कीन देलह? .... हमहुँ त' फोईड़ती?'

आब शिबना एहि अबोध के कोना बुझबौक जे गरीबक लेल कैलेंडर नहिं बनैत छै। ओकरा लेल कोन नया साल आ कोन पुरान साल! बोनिहारक लेल त' सभ साँझ पुरान साल आ सभ भोर नया साल होईत छै। जाहि दिन काज भेटल ताहि दिन पाबनि; जाहि दिन बैसारी ताहि दिन उपास .....! ओ बेटा के गरा लगा क' एतबे कहि सकलै – 'अपनो आऊर के दिन घुरबे करते बाऊ; तखनी अपनो आऊर पाबनि मनेबई। एखन तों नेना छैं ..... पैघ भ' पढ़ि–लिखि क' कमाय–खटाय लाग...तखन.....!'

बाप–बेटा दुहु एक दोसरा के मुँह ताकि रहल छल ..... आँखि साईत आँखिक भाषा बुझि गेल छलै।

जोंक

कहि नहिं ई कथा के श्रेणी मे राखल जेतै वा नहि। देशक उत्तरी भाग मे अत्याधुनिक भण्डारण–सुविधायुक्त केंद्रीय एकल खिड़की शुष्क बंदरगाह बनेबाक प्रस्ताव केंद्रीय सरकार के भेटलै जाहि पर अनुमानित लागत छलैक तीस हजार करोड़ रूपया। सरकार सँ सैद्धांतिक मंजूरी भेटलाक बाद करीब तीन मास मे परियोजना रिपोर्ट बनि क' तैयार भेलै। आब समस्या उठलै जे देशक कोनो व्यक्ति के एहि तरहक काजक विशेषज्ञता नहि छलै। तैं वैश्विक निविदा मँगा क' सलाहकार नियुक्त कैल गेलै। तीन मासक समय अहू मे लागि गेलै। सलाहकार परियोजना रिपोर्ट के अध्ययन केला के बाद एहि निष्कर्ष पर पहुँचल जे परियोजना रिपोर्ट अपूर्ण अछि आ एहि सँ कोनहुना परियोजना पूरा नहि भ' सकैछ।

अस्तु परियोजना रिपोर्ट बनाबक हेतु फेर सँ निविदा आमंत्रित क' क' एक टा कंसल्टेंसी फर्म के नियोजित कैल गेलै। कंसल्टेंसी फर्म द्वारा संशोधित परियोजना रिपोर्ट सौंपैत–सौंपैत अगिला नौ मास बीति गेल छलै। अनुमानित लागत सेहो तीस हजार करोड़ रूपया सँ बढ़ी क' पैंतालिस हजार करोड़ रूपया तक पहुँच गेलै। आब परियोजना पर काज शुरू भेल। भूमि अधिग्रहण मे बेसी मोश्किल उठाब' पड़लै आ एकरा सलटेबा मे लगभग डेढ़ साल लागि गेलै। जखन ठेकेदार निर्माण काज हेतु तैयारी शुरू केलक त' जकर जमीन अधिग्रहण कैल गेल छलै से सभ यूनियन बना क' धरना पर बैसि गेल जे प्रत्येक परिवार सँ एक व्यक्ति के बंदरगाह मे नौकरी भेटय। कतेक मोश्किल सँ ईहो समस्या सलटल। निर्माण काज शुरू भेल त' खोदाई मे जमीनक नीचा पहाड़ भेटलै जकरा सँ पार पेबाक दुईये टा रास्ता – एक विदेश सँ यंत्र आ तकनीशियन मँगायब दोसर बंदरगाह के स्थान परिवर्तन करब। दुहू विकल्प नहिं केवल खर्चीला छलै अपितु बेसी समय लागै बला सेहो छलै। दोसर महत्वपूर्ण घटना जे एहि बीच घटित भेलै से छलै पड़ोसी देश द्वारा सीमा पार स्पर्धी शुष्क बंदरगाह के निर्माण। आब एहि बंदरगाह के निर्माण सँ विदेशी मुद्रा अर्जित करबाक जे लक्ष्य छलै से त' धूमिल भ' गेलै। एम्हर काज बाधित भेला सँ ठेकेदार मध्यस्थता हेतु न्यायालय के शरण लेलक। अंततोगत्वा परियोजना रुकि गेलै।

तीस हजार करोड़ रूपया खर्च क' क' जे नींव खोदायल छलै से आब पर्यटक के आकर्षण के केंद्र छै आ गाइड सभ अपना–अपना ढंग स' एकर रोचक व्याख्या क' क' पर्यटक के जानकारी बढ़ा रहल छै। एम्हर सुनबा मे ईहो ऐल जे किसान सभ अपन कृषि योग्य भूमि के बर्बाद क' देबाक लेल आ गछल नौकरी नहि देबाक लेल न्यायालय के शरण मे गेल अछि। ओकर की भेलै से त' नहि जानि मुदा एतबा धरि सत्य जे ई परियोजना जोंक बनि गेलै छै।

ईमान

जड़काला धमकल आबि रहल छल मुदा समय आ आलस दुहू के कारण पुरना तूर के फेर सँ धुना क' रजाई बनबायल पार नहिं लागि रहल छल। धुनियाँ के तानी के फट्ट–फट्ट सुनि बहरेलहुँ आ हाक द' क' बजेलहुँ ओकरा। ओ तूर के उठा क' देखलक, खोल के उघारि क' ओकर लम्बाई–चौड़ाई देखलक फेर बाजल – 'मालिक चारि सय टाका दे दिहू।'

– 'दिमाग ख़राब छह तोहर! एकर चारि सय टाका?'

– 'काज देखबहू मालिक त' खुद्दे दे देबहू। कोई जादा न माँग रहेलियहू। बजार के भाव पता करहू ... एत्ता रूई के धुनाई, भराई, तगाई ओ भी एक–एक इंची पर! कोनो नजायज न माँग रहलीयहू।'

– 'नहिं हौ! चारि सय टाका कोनो कम्म नहिं होई छै! आखिरी तीन सय टाका देबह ...करबह त' कर' नहिं त' मशीने स' धुना–भरा लेब।' सोचलहुँ जते सस्ता तते नीक। ओ चुप–चाप बैसि क' तूर धुन' लागल। हम अपन काज कर' लगलहुँ। थोड़े कालक बाद ओ हमरा हाक द' क' भीतर स' बजेलक। ओकरा ल'ग मे एक आदमी साईकिल पकड़ने ठाढ़ छल। ओ कलपैत सन बाजल – 'काम त' हम करिये रहलियहू ...मजूरी अभीये दे दितहू त' ई बेचारा के हाथे घरे भेज देते। बच्चा सब रातो न कुछ खाये रहले।' हमर सौंसे देह सिहरि गेल। हम जेब स' पाँच सय के एकटा नोट निकालि क' ओकरा दिस बढ़ा देलियै।

– 'हमरा जरे एका खुल्ला कहाँ होइ हैं?'

– 'खुल्ला नहिं, तों पूरा राखि लैह।'

– 'न मालिक! एत्ता न तीने सय दहू।'

– 'राखि लैह तों। हमरा नहिं बुझल छलै जे तोहर धिया–पुता ..... हम तोरा सँ मोल–मोलई करै के लेल लज्जित छी। ई राखि लै तों ..... धिया–पुता खातिर!'

– 'न मालिक ! हमरा ऊपर पाप न चढ़बहू ..... हम दोनों के बीच जो मजूरी तय हुआ रहे उतना ही ईमान है। भूखे रहें पर हराम की न खिलाये यही अर्ज है ऊपर वाले से।'

हम निःशब्द छलहुँ।

फटैत कुहेस

जखन सँ बेटा के गाम एबाक समाद लालकाकी सुनलनि तखन स' त' जेना हुनका पाँखि लागि गेलनि। कचकैतो ठेहुन स' ओ नेंगराईते–नेंगराईते बेटा के पसीन के अदौड़ी, तिलौरी, तिसियौरी, चरौड़ी, बिड़िया, बगिया, कचड़ी के व्योंत मे अपस्याँत छलीह। मोबाईल स' त' हप्ता मे एकाध बेर गप्प भईये जाईत छलनि मुदा साक्षात मुँह देखला त' एहि फागुन मे पूरा पाँच बरख भ' जेतनि! लालकाकी आँचर सँ हाथ पोछि आँगुर पर हिसाब लगाब' लगलीह। कम समय आ एतेक रास काज!

राति मे भोजन काल बेटा के अनमनस्क देखि लालकाकी बजलनि – 'जल्दी–जल्दी मे अदौड़ी, तिलौरी, तिसियौरी, चरौड़ी, बिड़िया सभ बनौलहुँ ..... जड़लाहा रौदो कि एखनुका टिकै छै? ई खम्हारु अपने बाड़ी के अछि! आहाँ के गेला के बाद कहाँ कहियो उखड़लै! .... आहाँ बाबू के त' ई सभ खेबाक मुँहें ने छैन!' बेटा जेना किछु सुनने नहिं हो तहिना किछु पल चुप्प रहल फेर खखसि क' बाजल – 'हम की कहै छलहुँ बाबू ....!' लालकाका तिलकोरक तरूआ दाँत स' कटैत बजला – 'की?'

–'ई जे अपन खेत अछि पछवरिया बाध मे ताहि मे उपजा त' कोनो खास होइयै नहिं।'

–'उपजा कि हेतै! बटाईदार बस बीया बाउग क' दै छै –– ने कोनो खाद, ने पानि! तखन की अंगोर हेतै उपजा! जेहो उपजै छै सेहो खरिहान अबैत–अबैत रिया–खिया जाई छै।' – लालकाकी बिच्चे मे बजली। लालकाका कौर बिच्चे मे रोकैत बेटा दिस तकैत बजलाह – 'आहाँ कह' की चाहैत छलहुँ?'

– 'यैह जे .... एहन खेत रखला स' कोन फायदा!'

– 'मतलब?'

– 'नहिं हम कहैत छलहुँ जे एकरा बेच क' शहरे मे एकटा नीक फ्लैट'.....।

लाल काका के हाथक कौर हाथे मे रहि गेलनि। ओ जड़वत भ' गेलाह। 'उचिते त' कहै छथि बौआ! जाहि स' कोनो सोकाजे ने एहन खेत–पथार राखिये क' की? अनेरो ऊपर स' मालगुजारियो डाँड़ लगैत अछि।' काकी बेटा के हँ–मे–हँ मिलेलनि।

– 'आहाँ की बुझबै! गाम मे केयो तैं पुछैयै जैं दू धूर भूमि बाँचल अछि। हम जँ एको धूर अरजि नहिं सकैत छी त' हमर कोन हक़ पुरखा के खून–पसेना सँ अरजल संपत्ति के बोहा दै के? ' कहैत लालकाका लोटा ल' क' उठि गेलाह। पाछू स' बेटो उठि गेलनि। ओत' आब चुप्पी पसरल छल।

भोर मे खड़–बड़ सुनि क' लालकाकी बेटा के घर दिस गेलीह –– ओ तैयार

छल जेबाक लेल। 'ऐं! ई भोरे–भोर कत' तैयार भ' क' जा रहल छी?'

– 'हम आपस जा रहल छी..... छुट्टी नहिं अछि।'

– 'आहि रे बा! जरो–जलखै, एक कप चाहो तक ने पिलौं!'

– 'रह' दही ई सभ.....हमरा लेट भ' रहल अछि।' कहि क' ओ माय के पैर छुलक आ बैग ल' क' बहरा गेल।

– 'आहाँ लै ओतेक जतन स' अदौड़ी, तिलौरी, तिसियौरी, चरौड़ी, बिड़िया, बगिया, कचड़ी सभ के व्यौंत केने छलहुँ..... किछु खेबो ने केलहुँ !..... थमहू..... बान्हि क' द' दै छी ओत' कनियाँ बना देत।'

– 'नहिं रह' दही ई सभ..... अबेर भ' रहल अछि' –– कहि क' ओ आँगन स' बहरा गेल आ लालकाका के पैर छुबि चुपचाप बिदा भ' गेल।

दुरूख्खा लागि क' हिचुकैत; आँचर सँ नोर पोछैत लालकाकी बेटा के जाईत आ यतन सँ बनैल ओसारा पर राखल अदौड़ी, तिलौरी, तिसियौरी, चरौड़ी, बिड़िया सभ के देखैत रहि गेलीह। कुहेस बाहर आ भीतर दुहू ठाम फाटि रहल छल।

आकाशक ख़सल

अन्हर–बिहाड़ि मे जखन जोखना के घरो खसि पड़लै त' सोचलक जे कनियाँ–बच्चा के कलकत्ते ल' जै.....बच्चो सभ दू आखर पढ़ि लेतै आ कनियों के अपने संगे काज मे लगा देतै त' दू पाई भईयो जेतै। कलकत्ता मे बच्चा सभ के स्कूल मे नामो लिखा गेलै आ कनियाँ सेहो लेबर के काज कर' लगलै; मुदा जे नहिं भेलै से छलै दू पाई बचेनाई .....एहन डाँड़ तोड़ महगी मे पाई बचतै कोना? दू साँझ चूल्हे जड़ायब मोश्किल छै! नेयार केने रहै जे एहि बेर गह्वर पूजा मे गाम जैब ..... बरख स' बेसी भईयो गेलै गाम स' एला। कनियाँ–बच्चा त' गाम ज़ेबाक नामे स' उत्साहित छै! मुदा सभ टा सोचल चौपट क' देलकै मियादी बोखार.....पंद्रह दिन तेहन ने घिरियेलकै जे कनियों ने काज पर जा सकलै आ खोराक, दवाई–दारू मे कर्जे भ' गेलै। आबै–जाई के किराया, आर खर्चा सभ .....संग–संग कोनो प्राणी के देह पर ढंग के कपड़ो नै छै ... एहन लत्ता–कपड़ा ल' क' कोना जैत? लोको गाम मे कि कहतै? ई सभ लै पाई कहाँ छै जोखना लग! केकरा लग छै जे केयो कर्ज़ो देतै! मुन्सियो त' हिसाब ने फरिछा रहल छै।

कनियाँ–बच्चा झूर–झमान भ' गेलै.... मुँह बिढ़नी तुम्मा सन! 'ने राधा के नौ मन घी हेतै, ने राधा नचती' – कनियाँ बड़बड़ेलै। 'बच्चो के पोसनाई कोनो गह्वर पूजा स' कम छै?' – कहि क' जोखना गमछा स' मुँह क पसेना पोछलक। कनियाँ–बच्चा पहिने सहटि गेल छलै।

व्यतिरेक

ओना बरियाती के एखनो कोनो पता नहिं छलै मुदा कन्यागतक आगत–अभ्यागत सँ पंडाल मे बेस चहलपहल छलै। आई काल्हि त' चलने भ' गेल छै कन्यागत पक्षक आमंत्रित व्यक्ति कि घरबैयो सभ बिनु बरियाती, वियाह के प्रतीक्षा केने चाट–पकौड़ा खेनाई शुरू क' दैछ। बहरबैया त' खा–पी, गिफ्ट कन्यागत के थम्हा पहिनहिं निकसि जाईत अछि। अहू ठाम तहिना भेलै। लोक सभ विभिन्न व्यंजन के स्वाद लेबा मे मस्त छल कि तखने मार–मार के हल्ला भेलै – 'मार! मार सार के! भाग' ने दिहैं .... नहिं जानि कोम्हर बाटे घुसि गेल सरबा घरानि? हिम्मत ने देखू सरबा के धड़धड़ैल भोजने सामग्री दिस बढ़ल जाई छलै! सभ वस्तु छूबि दितै आई! ताबत कतेको थापड़ पड़ि चुकल छलै ओहि छौंड़ा पर। एक जन ठोंठ पकड़ि क' तेहन जोड़ सँ ने धक्का देलकै जे ओ छौंड़ा ओंघड़ा क' दूर जा खसल। सभ आगत–अभ्यागत अपन–अपन प्लेट लेने ओम्हरे देख' लागल। कननमुँह उठि क' ओ छौंड़ा अपन धुरियैल वस्त्र के दुहू हाथ सँ झाड़लक आ फेर पंडाले दिस तकलक। ओम्हर पंडाल सँ एक जन अपन कोटक ऊपरका जेब मे राखल फूलदार लिफाफ जे लगभग आधा बाहर छलै के बामा हाथे ठेकनबैत पंडाल सँ बाहर निकलि रहल छल। बाहर निकलिते डेग झाड़ि अन्हार मे कतहु हेरा गेल छल ओ।

आनंद

आषाढ़ त' समूचा बितिये गेलै; साओनो एखन तक धुरियैले छै। समूचा आकाश साफ.....मेघक कतहु दरश नहिं.....खेत सभ मे दरारि फाटल! सूरूज़ भगवान त' जेना आगि बरसा क' कोनो पापक बदला ल' रहल छथिन। मनुक्ख़क कोन कथा; माल–जाल, चिड़ै–चुनमुन्नी, गाछ–वृक्ष.....सभ अपन प्राण रक्षा लेल परेशान। रौदी भ' गेने धनरोपनी के कोनो आशे नहिं; गाम मे कोन काज भेटतै? एकेटा आश छै मधुबनी जा क' मजदूरी के। शहरी लोक के रौदी–दाही के कोन असरि ..... धराधर कोठा पिटने जा रहल अछि लोक। गामक लोक सभ के मजदूरी भेटि जाई छै ओहि मे। काज केन्हार बेसी आ काज कम्म! नतीजा होई छै जे कते दिन चारि कोस एनाई–गेनाई बेकारे भ' जाई छै आ सपरिवार पानिये पिबी रहि जाईत छै। तीन बरख भ' गेलै घर छाड़ला..... पुआरक छाड़ल घर कतेक टिकतै? ठाठे टा ठाढ़ छै आब.....कोरो–बाती सभ गलल! खाय के उपाय छै नहिं घर कत' स' छड़ैत!

रातिक गुमकी नहुँये–नहुँये कखन शीतल भ' गेलै आ कखन मच्छरक प्रकोप बिले लै से पतो ने चललै। सभ निसभेर निन्न मे सुतले छल कि झमाझम बरखा शुरू भ' गेलै। देह पर पानि चुलै त' गोपला धड़फड़ा क' बीछाओन–तीछाओन समेटने उठल। कनिया–बच्चा सेहो आँखि मिड़ते निन्न कामे भेला स' खिसियैल उठलै। सौंसे घर पलाड़ बहैत.....एको ईंच कतहु अवन्च नहिं। सभ एहि कात स' ओहि कात पानि स' बाँचै के जगह ताकैत। एहि सभ स' निफ़िक्र गोपला कल्हुका धन रोपनी आ मधुबनी जाई स' बाँचि ज़ेबाक ख्याल मे तेहन ने डुबल कि अनायासे ओकरा मुँह स' गीत पूरा तान स' बहरेलै – "भैया रे सुनही सभे सभा के लोक .....!!!" कनिया पहिले स' तमसायले छलै निन्न कामे भेलाक कारणे आ ताहु मे ठाढ़ो हेबाक लेल एको इंच भूमि अबंच नहिं! तई पर गोपला के राग टेरब ओकरा लेसि देलकै – "कहलकै जे किदन फाटय त' गाबी मलार ..... पेटबे कि लोटबे..... सट्ठा त' कहियो हेतै ने जे अपन दू हाथक मड़ईयो के ठीक–ठोर करायत ..... डाँड़ मे दम नै रहै त' वियाहे ने करितै.....!!!!" कनिया बजैत रहलै.....अपन तामस झाडैत रहलै! गोपला सुनलकै नै वा ओकरा खराब नै लगलै से बात नहिं.....आई ओ अपन खुशी के कम्म नहिं कर' चहैत छल।

अनुभव

गाम मे अपने पितियौत के वियाह छलै तै सभ के गेनाई अपरिहार्य। शोभित अपन घरक ओगरबाही के भार पड़ोसी के द' क' दू बेर अपन दरबाजा मे लागल बड़का ताला के ज़ोर स' घिचि क' ओकर मजबूती आ अपन सुरक्षा दुहू के मादे आश्वस्त भेल। पड़ोसी के भेंट क' क' फेर स' कहि देलकै ---- 'अहीं के भरोस पर घर छोड़ने जा रहल छी। काज ख़तम होईते तीन–चारि दिन मे आपस आबि जैब।' पड़ोसी स' फेर स' आश्स्वति पाबिये क' ओ रिक्शा पर पर बैसल गामक ट्रेन पकड़बा लेल। ताबे बेटा ख़ौंझाईतो रहलै ओकर सशंकित स्वभाव पर। मुदा एतबे बाजल' बाबू जल्दी चलू नहिं त' ट्रेन छुटि जैत।'

वियाह–दान नीक जकाँ संपन्न भेल। कर–कुटुम्ब के विदा क' क' आई सभ गोटे अपन डेरा पर घुमि ऐल। चाभी ताला मे लगेलक त' लगबे ने करै! भेलै चाभी त' ने बदला गेल। मुदा चाभियो के झबिया ठीके छलै। आहट सुनि पड़ोसियो के कनिया बहरेलखिन। कोनो उपाय नहिं देखि अंत मे ताला तोड़ल गेल। भीतर के दृश्य हृदय–विदारक ..... पूरा घर उघड़ा–भांड। स्पष्टतः चोर निचैन स' सौंसे घर पर हाथ साफ केने छल ..... पड़ोसियो सभ के कोनो आहट नहिं लगलै। शोभित के काटू त' खून नहिं ..... मुँह स' बकारे ने फूटि रहल छलै..... किन्कर्तव्यविमूढ़! पुतोहू हिचकि–हिचकि क' कानैत ..... धीया–पुता स्थिति स' अन्भिज्ञ! बेटा हिम्मत क' क' बजलै -- 'बाबू पुलिस के बजाऊ..... हम सभ बर्बाद भ' गेलहुँ ..... फुटलो खबटा ने छोड़लक चोरबा!' शोभित के मुँह स' बोली त' नहिं बहरेलै हाथे स' ईशारा केलकै 'एना भुलियो क' नहिं क'र! जेहो बाँचल छौ सेहो चली जेतौ!' आ थुस्स स' नीचा मे बैसि गेल ।

परिवर्तन

बेरोजगारी के दंश भोगै के साक्षी हमहुँ छी। कॉलेजक पढ़ाई समाप्त भेल ... सालक साल बितैत गेल.....सोरहि के सोरहि परीक्षा दैत रहलहुँ..... मुदा ओहिना के ओहिना। घरक लोक के निराशा बढ़ले जाईत। परीक्षा द' क' घर घुरल रही। माय दबले स्वर मे पूछने रहै – 'केहन गेल परीक्षा?' हम किछु बजितउँ ताहि स' पहिने घर स' बाबू के उत्तर ऐल – 'परीक्षा त' सभक नीके होईत छै; खराब त' होईत छै रिजल्ट!' बाबूक स्वर मे भरल कटाक्ष हमर हृदय के छलनी क' देने रहै। बाबूओ की करितैथ? पोसि–पालि, पढ़ा–लिखा देला। सभक माय–बाप के आश रहैत छै जे बुढ़ारी मे संतान सहारा दियै। ताहि पर घर स' बेसी बाहर के लोक के अदखोई–बदखोई – संगत गड़बड़ छै ..... एहन पढ़ाई स' कतहु एतेक टफ कम्पीटीशन पास हेतै.....तैयारिये करैत–करैत बुढ़ा जेता .....कोनो सरकारिये नौकरी के नाँगरि लटकल छै, एतेक लोक त' दिल्ली–बम्बई कमा रहल अछि..... की की नहिं! बात हमरो कान मे पड़ै; म'न मशोसि क' रहि जाई। लगातार भेटैत असफलता आब हमरो तोड़ि देने रहै। घरक लोको स' नजरि मिलेबाक साहस आब बाँचल नहिं छल आ तैं घर स' कटले रहबाक कोशिश मे रह' लगलहुँ।

सभक दिन एक ने एक दिन फिरैत छै; हमरो फिरल। नोकरी भेटल। सभ किछु सामान्य भेल। शहर एलहुँ त' शहरे के भ' क' रहि गेलहुँ। बरख स' बेसी भ' गेल गाम गेला। माय के रटनी लागल छै – 'तोरा सभ के देखै लै मोन अहुरिया कटैत अछि।' हमरो मोन कम नहिं औनाईत अछि गाम जेबा लेल। कैक बेर नियार कैले रहि गेल .... कखनो धिया–पुता के परीक्षा.....कखनो आँग–समाँग..... कखनो ऑफिस के काज – पार्लियामेंट सेशन, बजट, कोर्ट केस .....! टिकट तक कैंसिल कराब' पड़ि गेल।

आई यैह सोचि रहल छी.....कहियो घर जेबाक मोन नहिं होईत छल; आई घर जेबाक मोन रहितो जा नहिं पाबि रहल छी! समय सत्ते परिवर्तनशील छै!

अन्योनाश्रय संबंध

रोहित के घर गेलहुँ त' हुनकर चेहरा तमसायल सन बुझैल। हम सोफा पर बैसैत पहिने यैह पुछलियैन – 'आई अपने बड़ क्रोधित बुझा रहल छी! ऑफिस स' अबिते–अबिते की भ' गेल आहाँ के?' 'अरे की कहू! आई ऑफिस स' किछु अर्जेंट फाईल घरे ल' अनलहुँ जे राति मे आराम स' क' लेब। अत' देखै छी त' कम्प्यूटरे खराब! सभटा किरदानी छै ई छौंड़ा के! पढ़ाई–लिखाई त' किछु छै नहिं; भरि दिन कंप्यूटर पर गेम खेलैत रहैत अछि। ओहि स' वायरस भरि गेलै आ आब केलक सत्यानाश! हमर त' आब हाथे कटि गेल। अर्जेंट फाईल छै; काल्हि नौ बजे स' पहिने सबमिट करै के छल। आब अहिं कहू हम की करू?' एहि स' पहिने जे हम किछु बाजी ओ चाय के कप हमरा दिस बढ़बैत बजला – 'वर्माजी! साँच पुछि त' ई कंप्यूटर, टैबलेट, आईफोन बच्चा सभ के दूरि क' क' राखि देतै। पढ़ाई–लिखाई त' गेलै ताख पर..... जखन देखू तखन एहि सभ मे व्यस्त। की हेतै नवका पीढ़ी के से भगवाने जनता !!!' कहि क' ओ चायक सिप लेला आ पैघ निसाश छोड़लनि।

हम सोच' लगलहुँ – केहन अन्योनाश्रय संबंध छै! कंप्यूटर खराब भेल त' बच्चा केलक आ बच्चा खराब भेल त' कंप्यूटर केलक !!!

बेटा आ बेटी

देबू के बेटी जेहने पढ़ाई मे तेज बेटा तेहने भोथ! बेटी घरक काज मे मायक हाथ बँटबितो क्लास मे हरदम फर्स्ट! तकर उनटा बेटा एहि द्वारे क्लास मे प्रमोट होई जे केकरो फेल नहिं करै के सरकारी आदेश छै। बेटी के बड़ाई शिक्षक सभक मुँहें सुनि क' देबू गदगद भ' जाय त' बेटा के शिकायत सुनि मोन कुपित भ' जाई। कैक बेर तमसेबो करै त' माय–दादी ओकर आगू ढ़ाल बनि क' आबि जाई आ बचा लई।

मैट्रिक के रिजल्ट निकललै.....देबू के बेटी पूरा जिला मे दोसर स्थान प्राप्त केने छलै। 'हमरा विश्वास छल तों हमर नाम उजियार करबैं' कहि क' देबू बेटी के माथ चूमि लेने छलै। एहि स' आगू तखन ओ किछु बाजि नहिं सकल छल केवल आँखि स' अश्रुधारा बहैत रहलै। बेटी कहलकै – 'बाबू! हम डॉक्टर बन' चाहैत छी। तै लै कोचिंग क्लास जॉइन कर' पड़त।' 'हँ बेटा! जरूर ..... जरूर बनू आहाँ डॉक्टर! हमर पूरा सहमति अछि।' तखन कहि त' देलकै देबू मुदा कोचिंग के खर्चा आ फेर जौं मेडिकल मे एडमिशन भ' गेलै त' पढ़ाई के खर्चा! कत' स' एते पाई आनत ओ? ल' द' क' अढ़ाई बिघा खेत छै ओहि मे पसेना बहबैयै त' कहुना दुनू साँझ चूल्हि पजड़ै छै। मुदा बेटी पढ़ै मे चंसगर छै त' ओकर सहयोग नहिं करब सेहो नीक नहिं बुझेलै ओकरा। सोचलक अखन त' कोचिंगे के खर्च छै ने! से दू कट्ठा खेतो बेच क' द' देबै। मेडिकल मे एडमिशन भेला पर देखल जेतै। सुनै छियै आब त' पढ़ै लै बैंको लोन दै छै। ओ अपन ई विचार आ गाहक भजियबैलै पलटा के कह' गेल रहै। ओत' गामक किछु आर लोक सभ जुटलै। कतेक घमर्थन के बाद सभक निर्णय रहै जे बेटी त' आनक धन होईत छै। आई एत' छै काल्हि सासुर चल जेतै। ओकर वियाहो लै सोचहि पड़तै। देबू एहन कोनो सामर्थवान त' अछि ने जे एतेक खर्च करत। खेते कते छै जे वैह बेच क' सभ काज करत। फेर खेत बेच लेत त' गुजर कोना करत? बेटा छै तेहने अबंडसन! .....ओकरो लै त' किछु राखहिक चाहियै। नीक त' हेतै जे बरू बेटे के डोनेशनो द' क' कोनो मेडिकल–इंजीनियरिंग कॉलेज मे एडमिशन करा दई। ई सभ बिन माँगल सलाह देबू के यद्यपि नीक नहिं लागल रहै; मुदा ओत' ओ गुम्मे रहब श्रेयस्कर बुझने रहै।

आपस दलान पर आबि क' बैसल रहै त' बेटी आबि क' पुछलकै – 'बाबू की सोचलियै कोचिंग के बारे मे? परसूये स' बैच शुरू भ' रहल छै।' देबू के गुम्म देखि ओ फेर बजलै – 'पाई के दिक्कत त' हम बुझिते छियै!.....नहिं त' छोड़ि दियौ; हम अपने तैयारी क' लेब। बेसी परेशान होई के काज नहिं छै!' देबू के भक्क टुटलै; जेना निन्न स' जागल हो। बाजल – 'नहिं बेटा आहाँ जा क' फॉर्म ल' आऊ। आहाँ के एडमिशन हेबे करत। आहाँ के पढ़ाई मे पाई के कखनो हम बाधा नहिं ब'न' देब।'

उनटा बान्ह

गोटे तीस–चालीस लोक रहल हेतै हाथ मे तख्ती लेने जाहि पर किछु ने किछु संदेश लिखल छलै – 'मासूम छात्रों पर जुल्म बंद करो'; 'बच्चे स्कूल पढ़ने जाते, पिटने को नहीं'; 'अत्याचारी शिक्षक बर्खास्त करो' आदि–आदि। जोर–जोर सँ 'मुर्दाबाद!, हाय! हाय!' के नारा लगबैत ओ सभ हाईवे के जाम क' देने छलै। बैसाखक ओहि प्रचंड रौद मे सभ लहालोट। कतेक एम्बुलेंस मे मरीज जीवन–मृत्यु के बाजी लगा रहल छल; ककरो अदालत मे पेशी छुटि रहल छलै, केकरो नौकरी के इंटरव्यू के समय निकलि रहल छलै, कतेक चिल्हका गर्मी सँ आउल–बाउल भ' चिचिया रहल छलै, कतेक के हलक पानि बेतरे सुखि रहल छलै मुदा हड़ताली सभ के एहि सभ सँ की लेना–देना! पुलिस किछु छलैहो त' ओ निःसहाय दर्शक बनल गाछक छाँह मे ठाढ़। बस मे बैसल हमरा अपन स्कूलक दिन मोन पड़ जागल..... छोट–छोट गलती पर करची स' मास्टर सभ सौंसे देह फोड़ि दैत छलखिन। बाप–पित्ती मास्टर के उपराग के के कहै उनटे बच्चे के दोष देथिन – 'पढ़बैं नहिं, गलती करबैं त' एहिना पिटेबैं!' हँ! माय–दादी जरूर माथ मे तेल लगा दई आ फुटल पीठ के सेकै। कखनो–कखनो घरो पर पढ़ाई नहिं केला पर वा कोनो बदमाशी केला पर मास्टर सँ शिकायत क' क' पिटबैल जाई। मास्टर के चेहरा विद्यार्थी के लेल कोनो यमराज सँ काम नहिं! निर्दयता सँ जे पिटय लगथिन त' करचियो टुटि जाई। सोचैत–सोचैत सहसा हम अपन हाथ निहारय लगलहुँ। फेर झट्ट द' हाथ नुका लेलहुँ..... केयो देखि त' ने रहल अछि?

छगुन्ता

देवेशबाबू के वियाहक रजत–जयंती समारोह के भोज मे ईष्ट–मित्र, कर–कुटुंब संगे मोहल्ला के अधिकांश लोक सभ सेहो आमंत्रित छल। बढ़िया इंतजाम छलै विवाह–भवन मे ––– शाकाहारी आ मांसाहारी दुनू तरहक भोज्य पदार्थ..... रंग–विरंगक स्नैक्स, पेय पदार्थ, आइसक्रीम सभ किछु। आ भोजनो तेहने विन्यासक – जकरा जे मोन होई से खाऊ। लोक सभ हाथ मे प्लेट लेने अपन–अपन पसिन्नक भोज्य पदार्थक रसास्वादन के संग–संग बात–चित, हँसी–मजाक मे मशगूल। तखने ककरो नजरि पड़लै अजोधी के प्लेट दिस आ लगले एक दोसरा स' काना फुसकी सुनि सभ हुनके देख' लागल – प्लेट खाली मासु आ रसगुल्ला स' ओम–डाम भेल आ अजोधी निर्विकार भाव स' एक कोन मे नीचा कालीन पर बैसल लपा–लप्प खेने जाईत। हमरो बड़ छगुन्ता लागल जे अजोधी बिना भात–रोटी के खाली मासु आ रसगुल्ला कोना खा रहल छथि! नहिं रहल गेल त' पूछिये देलियैनी। ओ मुँहक कौर के घोंटि क' बजला – 'मर्र! भात–रोटी त' सभ दिन घरो मे खाईत छी..... पार्टियों मे यैह सभ खाऊ? जे रोजाना नहिं भेटै वा जे कीमती छै से ने खेबाक चाही की अनेरे आहाँ सभ जकाँ खीरा–मुरई चिबबैत रहू?' सभ लोक अपन–अपन कौर आ बात रोकने हुनके देखि रहल छल। अजोधी चारू कात स' लोक सभ स' घेरायल केवल प्लेट दिस नजरि गरेने निर्विकार खा रहल छलाह।

दृश्यांतर

मिथिला के कला, संस्कृति, खान–पान, विधि–व्यवहार, आगत–स्वागत सभ अनुपम..... अप्रतिम! मिथिला पृथ्वी पर एकमात्रे एहन क्षेत्र अछि जत' पाहुन के भूख नहिं रहितो जबर्दस्ती खेबा हेतु मजबूर कैल जाईत छै। हमरो संगे भेल अछि। एक टा बरियाती मे जखन सभ अपन–अपन ईच्छे भरि पेट भोजन क' हाथ बारि चुकल छलाह तखन कन्या के पिता फुसिये तामस करैत रसगुल्ला के बारिक स' डोल छीनि लेलनि – 'ला एम्हर ला! परसै के लुरि छैन नहिं आ चललाहै बारिक ब' न'!' लोक लेबा स' मना केलकनि त' निहोरा क' र' लगलाह – 'हे! हमर प्रतिष्ठा राखि लिय! दूईयो टा त' ल' लिय। ओकरा स' हम डोल छिनि क' अनने छियै! अपने नहिं लेबै त' ओ हमरा मुँह दुसत। ' किछु लोक एहन दुराग्रह पर हुनकर मान राखियो रहल छल। मुदा हम दुनू हाथ स' अपन पात छेकि लेलौं – 'नहिं श्रीमान! हमरा क्षमा कैल जाओ! एको रत्ती आब हमरा भूख नहिं अछि। आब हमरा अपकार क' जैत।' ओ त' ठमकि गेलाह मुदा हुनका पाछु–पाछु चलि रहल दोसर जन हमर हाथ अपन हाथ स' जबर्दस्ती हटा देलनि – 'हे दहुन हिनका जाँति क'। जुआन–जहान भ' क' आहाँ सभ नहिं खैब त' के बुढ़–बुढ़ानुस खैत! खाई मे लजाई जुनि।' कहि क' ओ हमरा आगाँ बैसि गेलाह आ बजलाह – 'यौ मैथिल के कतहु देखलियै यै रण मे मरैत! मैथिल खाईते–खाईते मरैत अछि।'

हुनकर अंतिम वाक्य कि संकेतित करैत छल से हम एखनो नहिं बुझलियै!

अन्हार

शंभू के जहिना–जहिना बेटी जन्म लैत गेलै तहिना–तहिना घर मे उदासी पसरैत गेलै। आ जखन पाँचमो बेटीये भेलै त' कन्ना–रोहट तक उठि गेल रहै। संयोग स' छठम संतान बेटा भ' क' सभक मुँह पर मुस्कान अनलकै। हुलासे सभ रोमांचित! छठियार मे सभ क'र–कुटुंब के न'त– हकार पठायल गेलै..... बड़का भोज भेल रहै। एतेक दैवे–सेवे ककुलता स' बेटा भेल रहै तखन ओकर दुलारू भेनाई त' स्वभाविके! घरक सभ लोकक चेष्टा रहै जे कखनो बच्चा कानै नहिं..... सभ हाथे–हाथे केने। कनेक पैघ भेलै त' ओकर ईशारा होई स' पहिने ओ वस्तु ओकरा लेल हाजिर। ओकर जिद्दो तेहने –– गाछ पर बैसि क' खैब; पोखरि मे जा क' ढ़ेपा फेकब..... की–की नहिं। खाई–पिबै के जिद्द त' अलगे.....कुसमय कोनो वस्तुक जिद्द! आ से पूरो होई। ओई दिन बड़की बहिन पढ़ैत रहै। ओ एलै आ कह' लगलै जे किताबक पन्ना फाड़ि क' नाव बना दे। ओ कतबो बुझब' चाहलकै जे कॉपी के पन्ना वा अखबारक नाव ल' लियै मुदा ओ जिद्द पर अड़ि गेलै आ जखन लगलै जे जिद्द पूरा नहिं हैत त' ओत' राखल गिलास तामस मे उठा क' बहिन पर फेक मारलकै। गिलास ओकर कपाड़ मे लगलै आ ओकर कोण स' कपाड़ फुटि छड़–छड़ शोणित बह' लगलै। ओकर चिचियायब सुनि सभ दौड़लै। माय अपन तरहत्थी स' शोणित बन्न करै के प्रयास कर' लगलै। दादी बात बुझि बजलीह – 'ऐं गै! एतेक खेखनिया करैत छलहु त' एकटा पन्ने फाड़ि क' नाव बना दितही त' की भ' जईतौ? बड़ होईतो त' दोसर किताब किनबा लितैं! ई त' अबोध छै; तों त' बुझनुक होइतैं! दूर्र जो! ताहू मे केहन अथबल छलैहैं जे मार' लगलौ त' ओहि ठाम स' पड़ायलो ने भेलौ!'

दादी के बात ओकर घाव के आर गहींर आ दर्द के कैक गुणा बढ़ा देने रहै।

ईच्छा–मृत्यु

डॉ. रत्नेश पुल पर ठाढ़ भेल बाढ़िक पानि आ ओहि संग भसिऐल जाईत एनेकानेक खर–पथार संग एकाकार भ' रहल छल। मोनक बाढ़ि आ बाहरक बाढ़ि दुनू मे एकात्मता बुझा रहल छलै। आई हॉस्पिटल के वार्ड नंबर–13 मे रोगी सभ के देखैत नजरि पड़लै एकटा रोगी पर – मरईमान, कृशकाय, कारी मुरझैल चेहरा, पपड़ी परल ठोर! एकरा देखिते दर्द स' कुहरैतो ओकर चेहरा पर मुस्कानक एकटा रेख पसरि गेल रहै तकरा ई अनुभव केने रहै। ओकर चेहरो एकरा किछु–किछु चिन्हल सन बुझेलै मुदा दिमाग पर जोर दईयो क' ई ओकरा नहिं चिन्हि सकल। असह्य वेदना के दबेने वैह कहने रहै – 'डॉ. रत्नेश! बड़ खुशी भेल आहाँ के एहि ठाम देखि क'। हमरा नहिं चिन्हलहुँ ने? मुदा आई हमरा अपन परिचय देमहि पड़त। हम अर्चना छी डॉ. रत्नेश!'

– 'अर्चना ठाकुर !'

– 'हँ डॉ. रत्नेश! छात्र जीवनक अर्चना ठाकुर .... आब अर्चना मिश्र!' दाँत पर दाँत बैसा क' टीस के सहैत अर्चना करोट फेर' चाहलकै।

– 'मुदा ई कोना.....?' रत्नेश अपन वाक्य पूरा नहिं क' पैल रहै।

– 'एकर बड़ पैघ कथा छै डॉ. रत्नेश। सार–तत्व जे हमर पति मुंबई मे रहैत छलाह। पाँच साल पहिने हुनकर कोन बीमारी स' मृत्यु भेलनि से त' पता नहिं मुदा हमरा एड्स अछि से जाँच स' साबित भ' चुकल अछि। एड्स स' त' हम लड़ि लितौं; मुदा लोकक हीन–दृष्टि आ कटाक्ष के हम नहिं सहाज क' पाबि रहल छी डॉ. रत्नेश!' कहैत–कहैत ओ अबोढ़कार भ' क' कान' लागल। रत्नेश ओकर हाथ पकड़ने चुपचाप ठाढ़ छल। फेर ओ हिचकैत–हिचकैत कहुना–कहुना बाजल – 'आहाँ हमर क्लास फेलो रहि चुकल छी तैं आहाँ पर हमरो किछु अधिकार बनैत अछि। .....आहाँ डॉक्टर छी..... हमरा ईच्छा–मृत्यु के उपाय क' दिय.....हमरा एहि कष्ट स' उद्धार क' दिय डॉ. रत्नेश!' – कहि क' ओ चद्दरि स' मुँह झाँपि सिसकि–सिसकि क' कान' लगलै।

बचत

आई हमर नौकरी के पहिल दरमाहा के रूपया के गड्डी हाथ मे पड़ल त' मोन हुलसि गेल। एतेक रास रूपया! संभावित खर्चक हिसाब जोड़य लगलहुँ .....ब्रांडेड कपड़ा, जूता .....नवीनतम आई–फोन, मकान किराया.....महिनाक खर्च .....! तैयो पाई बचिये रहल अछि! आई हम अपना के मातवर मे गिन' लगलहुँ। फेर मोन पड़ल बाबूजी के सीमित साधन सँ असीमित आवश्यकता पूर्ति हेतु संघर्षरत जीवन। मोन पड़ल कतेक दिन स' लालसा छल पहिरै के। कतेक मासक खेखनिया आ जिद्द के बाद बाबूजी ल' गेलाह हमरा जूता खरीदाब'। एकटा दोकानवाला कहलकै – छः सय रूपया। बाबूजी बजला – बड़ महग छै। चलू दोसर दोकान मे देखैत छियै। एहिना क्रम चलैत रहल। हम आजिर भ' गेल रही। खौंझा क' बजलौं – 'कतेक दोकाने–दोकाने घुमैत रहब। एक ठाम ल' लिय।' बाबूजी बजला – 'बाऊ! एक रूपया बचा लेब एक रूपया कमेबाक बरोबरि अछि। एके एक बूँद सँ घैल भरैत छै।'

बाबूजी के कथन मोन पड़िते हमर मुट्ठी जोड़ स' बन्हा गेल। सभटा पाई मुट्ठी मे सीमित भ' गेल छल।

चोर

ओ नामी चोर छलै आ केवल मंदिरे मे चोरि करैत छलै। सैकड़ो मंदिर मे चोरि केने हेतै मुदा कहियो पुलिस ओकरा पकड़ि ने पेलकै। ओकर सुराग देनहार लै ईनाम सेहो राखल गेल छलै। मुदा सेहो व्यर्थ! आ से आई ओ पकड़ा गेलै सेहो नाटकीय ढ़ंग स'। ओकरा हाथ मे हथकड़ी आ डाँड़ मे रस्सा बान्हि क' थाना पर राखल गेल छलै। देखै लै ओकरा लोक उजहि पड़लै। ओत' पत्रकारो सभ जुटल छलै जे ओकरा स' विभिन्न प्रकारक प्रश्न पर प्रश्न पुछि रहल छलै। कनेक काल त' ओ कोनो प्रश्नक उत्तर नहिं देलक फेर उठि क' कुर्सी पर ठाढ़ भ' क' अपने बाजब प्रारंभ केलक – आहाँ सभ जान' चाहैत छी जे हम चोरि करब कियै शुरू केलहुँ सेहो मंदिरे मे। त' सुनु। नेनपने मे हमर बाबू मरि गेला। माय कुटाऊन–पिसाऊन क' क' कहुना हमरा पोसैत छल। एक बेर कोल्हुआर मे कुसियार लगबैत मायक हाथ ओहि मे चल गेलै। लोक सभ उठा–पुठा क' अस्पताल ल' गेलै। अस्पताल मे ने डॉक्टर ने दवाई! डॉक्टर अपन निजी क्लीनिक पर ईलाज लै अगात पाई मंगलकै। कोल्हुआरवाला पाई देबै लै तैयार नहिं भेलै; हमरा लग पाई छलै नहिं। हम मंदिर–मंदिर जा क' भगवानक मूर्ति के आगू कते कनलौ–खिझलौं, निहोरा–विनती केलहुँ, कबूला–पातर केलहुँ मुदा सभ व्यर्थ! माय हमर मरि गेल। देयाद सभ घरो–घरारी छिनी क' हमरा बईला देलक। हम एक बेर फेर भगवान के शरण मे गेलहुँ मुदा भगवान के फेरो हमरा पर दया नहिं एलैन। भगवान हमर लुटैत दुनियाँ नहिं बचेने रहथि तैं हम विद्रोही बनि क' भगवाने के लूट' लगलौं। जहाँ तक पकड़ाई के बात छै ने त' पुलिस हमरा कहियो पकड़बाक प्रयास केलक आ ने हम ओकरा पड़ि लगितियै। आई हम अपने पकड़ा गेलहुँ एहि लेल जे एहि धंधा मे एतेक कमाई नहिं रहलै जे सभ के बाँटियो क' अपन गुजर चलै।

सभ चुप–चाप सुनि रहल छल। व्यवस्था के सामने ठाईं–पठाईं त' वैह बाजि सकैत छल।

दरिद्र–नारायण

मंदिर जगजीयार छलै आ तैं भक्तक ताँता लागल रहैत छलै। भक्त बेसी अबैत छलैक ताहि लोभे भिखारियोक संख्या बेसिये छलैक। ओहि भिखारि सभ मे किछु त' ठीक–ठाक रहितो भिखारिक बगे बनैने छल मुदा बेसी संख्या असक्के लोकक छलै। एकादशी भेलाक कारणेँ आई मंदिर मे लोक मिस्स पड़ै छलै.....प्रसाद, फूल,बेलपत्र, अछिंजल सम्हारैत आ भिखारि सभक ऊपर उठल हाथ स' छुएबा स' अपना के बचबैत सभ पतियानी मे ठाढ़ अपन बारी एबाक प्रतिक्षा मे। भिखारि सभ सेहो आबाज लगा–लगा क' याचना क' रहल छल। किछु दयालु लोक एकाध रूपया दैयो दै; मुदा बेसी लोक त' ओकर सभक याचना दिस बिनु काने–बात देने आगू बढ़ल चल जाई। एतेक भिखारि छलैक त' सभ के सभ दिन भीख भेटिये जाई तकर कोन गारंटी? ओ एक बेर अपन खाली टिनही बाटी के देखि लियै त' दोसर बेर मंदिर जाईत–अबैत लोक सभ के। दुपहरियो बीति गेलै .....लोकक अबरजात सेहो कम्म भ' गेलै .... मुदा आई बाटी मे एको कौड़ी नहिं खसलै! आब त' साँझो होमईये बला छै। भोर स' मुँह मे बस दू टा पूरी आ कनेक तरकारी जे भंडारा मे भेटल छलै सैह गेल छै। लोक सभ पाथर के नारायण पर रंग–विरंगक प्रसाद, रूपया–पैसा चढ़बैत अछि मुदा जिबैत दरिद्र–नारायण के घुरियो क' नहिं देखैत अछि! निराश ओ बैसाखी बले उठि अपन बोरा झाड़ि क' काँख तर दबेलक आ बाटी नेने नेंगराईत पुरना स्कूल, ज'त' ओ रहैत अछि, बिदा भ' गेल। मंदिर मे बोर्ड टाँगले छै जाहि पर मोट आखर मे लिखल छै – 'नर सेवा, नारायण सेवा'। मुदा ओहि दिस देखबाक आ सोचबाक पलखति ककरा छै?

मानवता

'मार! .... मार! भाग' ने पाबौ! .... पड़ा! पड़ा!' के स्वर चारू कात गूँज' लागल छलै। सभ जान बचाब' खातिर बेछोह पड़ायल जा रहल छल। सभक घरक केबाड़ फटाफट बन्न भ' गेल रहै। एहन मे ओकरा बुझा ने रहल छलै जे क'त' जाय? की करै? दंगाई सभ एम्हरे दौड़ल आबि रहल छलै। ओ धड़फड़ी मे एकटा खुजल घर मे प्राण–रक्षा लेल घुसि गेल। भीतर मे एकटा बूढ़ महिला मात्र। किछु बाजि नहिं भेल रहै ओ केवल दया–याचना मे क'ल जोड़ि नेने रहै। ओ बूढ़ी ओकर रक्षा हेतु आश्वस्ति केलकै। तखने ओकर नजरि गेलै कात मे राखल बदना आ देवाल पर टाँगल मक्का–मदीना के फोटो पर। ओकर सौंसे देह सिहरि गेलै – आब प्राण–रक्षा मोश्किल! गलत घर मे आबि गेल ओ! अपने आप जाल मे फँसि गेल। आब विधातो ने बचा सकैत छथिन। बुढ़िया एक ग्लास पानि आनि क' देलकै – 'बेटा निश्चिंत रहो। तुम हियाँ सुरक्षित हो। तुम्हारा ईहाँ कोई कुछ नहीं कर पायेगा।' मुदा ओकरा विश्वास नहिं भेलै। ओकर करेज केरा पात जकाँ डोलय लगलै। कदाचित जे ड'र खस्सी के चिकबा के आगाँ होईत हेतै सैह ड'र एकरो भ' रहल छलै। ताबते मे दंगाई सभ ओकर घरक आगू जमा भ' गेलै। ओहि मे स' एक गोट करकि क' पुछलकै – 'खालाजान! तुम्हरे घर मे कोई काफिर आकर छिपा है? निकालो उसको बाहर।'

– 'हियाँ कोई काफिर नहिं आया है।'

– 'आया कैसे नहीं है? हम सबने अपनी आँखों से देखा है किसी को भाग कर इस घर में आते हुए।' सभ समवेत स्वर मे बजलै।

– 'कैसे मुसलमान हो रे नालायको! दोजख मिले तुम सबको। मुसलमान का मतलब जानते हो? जिसका ईमान नहीं वह मुसलमान कैसा? बेगुनाह का जान लेना कैसा ईमान है रे कमीनो ? डूब मरो चुल्लू भर पानी में। '

– 'ये ऐसे नहीं मानेगी घर का तलाशी लो।' कोनो स्वर भीड़ मे स' निकललै आ एक आदमी आगू बढ़ि क' चौकठि पर ठाढ़ बूढ़ी के धक्का द' क' घर मे घुसक प्रयास केलकै। जाबे ओकर सभक नेता ओकरा रोकौ ताबे धक्का स' बूढ़ी खसि पड़ल छलै। दंगाई सभ हो हो करैत आगू बढ़ि गेलै। ओ कोठी दोग स' बहरायल। बूढ़ी के कपाड़ फुटि क' शोणित स' सौंसे देह भीजल छलै। ओ बूढ़ी के कोर मे उठेलक आ सुनसान पड़ल रस्ता पर बेछोह भागल जा रहल छल.....बिना कोनो दंगाई के भय के।

परतीक गाछ

इंटरव्यू रूम स' बाहर निकललहुँ..... एहन जड़कालो मे हमरा मुँह पर पसेना चुहचुहा ऐल छल। भविष्यक अनिश्चिंतता हृदयक धड़कन बढ़ा देने छल – पता नहिं की हैत? इंटरव्यू बोर्ड के सदस्य सभ केहन–केहन प्रश्न क' रहल छल – आहाँ के कोनो गंभीर बीमारी त' नहिं अछि, आहाँ अपना के आगू सरकारी सेवा हेतु कियै योग्य बुझै छी, आहाँ के रखला स' विभाग आ सरकार के कोन लाभ, एहन कोन काज छै जे आहाँ विशिष्टता स' क' सकैत छी, आदि आदि।

हम डगमगाईत डेगें अपन रूम मे कुर्सी पर आबि क' बैसि जाईत छी। बाबू नेनपन मे बुझाबैथ – मोन लगा क' पढ़ू; एखन नहिं पढ़ब त' आगू जा क' पढ़' पड़त। से कहाँ बुझि पैल रहियै ताहि दिन। आब बुझलियै समय गुदस्त क' क'! तहिया खेल–धुप क' क' समय बितेलहुँ त' नतीजा अछि आब मोटका–मोटका फाइल पढ़ि क' संक्षेपण आ उचित–अनुचित के विवेचन करै छि जाहि पर उच्च अधिकारी निर्णय लैयै। ताहि दिन नहिं पढ़लहुँ त' सत्ये आब फाइल पढ़ैत छी। स्कूलक किताब पढ़ै मे मोन नहिं लागै आब फाइल पढ़' मे मोन लगेलहुँ। काजक धुन सवार केलहुँ। जे काज भेटै से लागै माथ पर बोझ अछि आ तकरा कतेक जल्दी निबटा ली। परिणाम भेल आर काज बढ़ैत गेल .... आनो–आन सीटक। हम हपसि क' करैत गेलहुँ ; नहिं कहियो ने कहलियै। पूरा ऑफिस मे हमरे चर्चा.....अधिकारी सभ अपना स्टाफ मे हमरा राख' चाहै। हम गुमाने फूलि क' कुप्पा। कखन भोर होई आ कखन साँझ से बुझबे ने करियै काजक आगू! घर–परिवार मे की भ' रहल छै ताहू स' कोनो मतलब नहिं। दरमाहा उठा क' द' दियै तकरा बाद निश्चिंत! सोची त' केवल आ केवल ऑफिस के काजक मादैं।

एते केलाक बादो सरकारी नियमानुसार हमर आगू के सरकारी सेवा बरकरार राखै के वा समय स' पूर्व सेवा–निवृत क' देबाक लेल बोर्ड बैसलै.....! हमर इंटरव्यू लेलक.....! .....उटपटांग प्रश्न सभ पुछलक! पता नहिं की हैत? धियो–पुता पढ़िये रहल अछि। पूरा दरमाहा स' त' कहुना क' गुजर–वसर होइयै; पेंशन स' कोना गुजर हैत?

चपरासी एकटा कागज़ पर हमर दस्तखत ल' क' ओकर दोसर कॉपी हमरा द' क' चल गेल – 'श्री ..... इज़ फाउंड फिट फॉर कॉन्टीनुअन्स ऑफ़ फरदर गवर्नमेंट सर्विस .... । हमर आँखि बन्न भ' जाईत अछि आ आँखिक कोर स' दू बून्न नोर टघरि गेल।

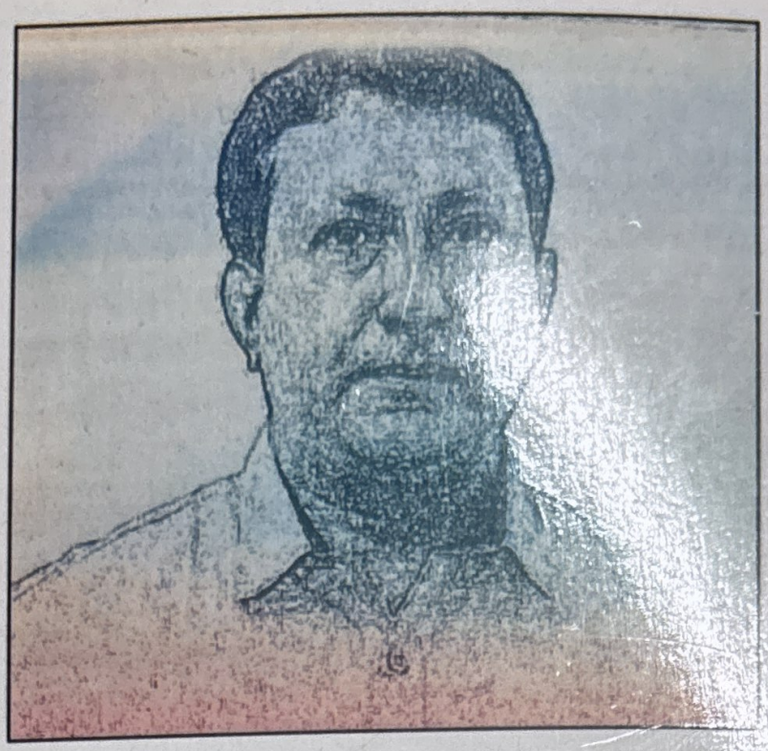

कुमार मनोज कश्यप

जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत सलेमपुर गाम में। स्कूली शिक्षा मध्य विद्यालय शम्भुआर आ महेश युगल नारायण उच्च विद्यालय, शम्भुआर मे। उच्च शिक्षा जगदीश नंदन महाविद्यालय, मधुबनी सँ।

प्रकाशित कृति : बदलैत समय – मैथिली लघुकथा संग्रह। एकरा अतिरिक्त अनेकानेक रचना सभ आकाशवाणी सँ प्रसारित आ पत्र–पत्रिका सभ मे प्रकाशित।

आजीविका : केन्द्रीय सचिवालय सेवाके अधिकारी। सम्प्रति भारत सरकार के अवर सचिव (गृह मंत्रालय)

गामक पता : सलेमपुर (पत्रालय), वाया–पंडौल, जिला –मधुबनी, बिहार – 847234

वर्तमान पता : 5/8, न्यू मिन्टो रोड हॉस्टल (ब्लाक–I), नई दिल्ली–110 002

संपर्क ईमेल : writetokmanoj@gmail.com

दूरभाष : 011–23231873 मोबाइल : 09810811850